LEAVE OF ABSENCE TO SHRI SAT PAUL MITTAL

MR. CHAIRMAN: I have to inform embers that I have received the llowing letter dated 13th November, 980, from Shri Sat Paul Mittal:

"Since I am attending the United Nations General Assembly Session as a member of the Indian delegation, it is not possible for me to attend the ensuing Session of the Rajya Sabha starting from November 17th, 1980. Hence, my absence may please be condoned."

Is it the pleasure of the House that rmission be granted to Shri Sat ul Mittal for remaining absent from l the meetings of the House during e current Session?

(No Hon. Member dissented)

MR. CHAIRMAN: Permission to main absent is granted.

Now, I seek permission to remain sent myself.

[Mr. Deputy Chairman in the Chair]

ALLING ATTENTION TO A MATER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

eteriorating law and order situation in the country

संसदीय कार्य विभाग में राज्य मंत्री (श्री तारामा केसरी) : मेरा आपसे विशेष ाग्रह है कि जैसे कि बिजनेस एडवाइजरी मेटी में निर्णय हो चुका है कि कालिंग अटेन्शन क घंटे में खत्म कर दिया जाए, इसलिए रा आपसे निवेदन है कि चूंकि सरकार का ाम अभी बाकी है, इसलिए आपसे विशेष िवेदन है कि उस निर्णय के अनुसार एक टे के अंदर ही यह कालिंग अटेन्शन समाप्त र दिया जाए।

श्री हरी शंकर भाभड़ा (राजस्थान) : ह इतना महत्वपूर्ण विषय है . . .

(Interruptions)

श्री उपसभापति : यह बात सही है कि र्णय यही हुआ था और बुलेटिन में उसकी ूचना भी दी गई थी कि जो माननीय सदस्य कालिंग अटेन्शन रेज़ करते हैं, वे सात मिनट बोलेंगे और दूसरे माननीय सदस्य तीन-चार मिनट बोलेंगे। इसलिए मैं आप सब से अनुरोध करूंगा कि उस पर ध्यान रखें और समय पर अगर पूरा कर दिया जाए, तो अच्छा होगा।

श्री नागेश्वर प्रसाद शाही (उत्तर प्रदेश): यह विषय महत्वपूर्ण है।

श्री उपसभापति : विषय तो महत्वपूर्ण है ही, समय भी सदन का महत्वपूर्ण है।

श्री रामेश्वर सिंह (उत्तर प्रदेश) : मेरा निवेदन यह है कि यह प्रश्न महत्वपूर्ण है और इसके चलते यदि आप समय की पाबंदी करेंगे, तो . . . .

(Interruptions)

श्री उपसभापति : आप काल-अटेन्शन शुरू करेंगे।

श्री रामेश्वर सिंह : मैं देश में कानून और व्यवस्था की बिगड़ती हुई स्थिति की ओर गृह मंत्री जी का ध्यान दिलाना चाहता हूं।

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI YOGENDRA MAKWANA): Mr. Deputy Chairman, Sir, even though maintenance of law and order rests mainly with the State Governments, the Central Government is also naturally concerned about it. The Central Government is in constant touch with the State Governments and renders them all possible assistance whenever required.

The law and order situation in the country is showing definite improvement and is better than what it was a year back, even though all of us would desire it to be still better. No doubt, there are local incidents of violence, agitational activities and unrest in some parts of the country, but this cannot be helped in a large country like ours. This should also be viewed against the steady deterioration in the law and order situation

[Shri Yogendra Makwana]

in the country during the last few years. Government, however, has taken all steps not only to check further deterioration but to bring about a positive improvement.

There is a growing tendency in certain section of the society to take recourse to violence for redress of their individual or collective grievances and engineer agitational activities rather than adopting a lawful course. Government has repeatedly made it clear that each and every issue should be resolved by negotiations and in a peaceful manner.

The law and order situation in the North-Eastern Region has been showing gradual improvement. The prolonged agitation in Assam over the foreigners' issue has created an atmosphere of distrust, suspicion and bitterness. Government has made known its belief in resolving the problem through discussions and has kept its doors open. Several rounds of discussion have taken place with the leaders of agitation but the talks have remained inconclusive. It is hoped that saner counsel will eventually prevail amongst the agitators and the issues will be resolved peacefully. After the recent incidents of violence, the law and order situation in other parts of the North-Eastern region is now, by and large, peaceful.

There have recently been a few unfortunate incidents of communal violence in some parts of the country. They could however, be localised and brought under control. It is gratifying to see that a number of festivals of different communities were observed in an atmosphere of peace and harmony during the last five weeks.

Government is aware of the activities of certain anti-social elements and groups having disruptive and fissiperous tendencies and have taken adequate steps to re-establish the role of authority which had considerably eroded during the last three years. The increasing trend noticed from 1977, regarding atrocities on Harijans and other weaker sections of the society has definitely been checked this year.

While, on the one hand, Government has decided to bring the political parties and other groups on a common platform of the National Integration Council to seriously deliberate on the problems posing a threat to the national unity, on the other hand the administrative machinery is being strengthened in the form of reorganisation and modernisation of police forces, and certain additional provisions have been brought on the statute book to enable the law and order authorities to take firm and timely action in curbing anti-national and anti-social elements.

Government is confident that with the cooperation of citizens from all walks of life and political parties and with the powers available to the law enforcing agencies, the law and order situation would continue to show improvement in future also.

SHRI PILOO MODY (Gujarat): It all started on the 27th March, 1977. Is it not?

श्री रामेश्वर सिंह : श्रीमान्, उपसभापति महोदय, मंत्री जी ने बताया है अपने बयान में कि देश की कानून और व्यवस्था की स्थिति संतोषजनक है, उसमें काफी सुधार पिछले वर्ष की तुलना में हुआ है। श्रीमन्, आपके द्वारा मैं बताना चाहता हूं कि पिछले वर्ष की तुलना में आज देश की वर्तमान कानून और व्यवस्था की स्थिति इतनी तेजी से बिगड़ी है, इतनी तेजी से दिन पर दिन बिगड़ती चली जा रही है, जिसका कोई वर्णन करना मेरे लिए उतना संभव नहीं है। मैं चंद बातों की तरफ सरकार का ध्यान एक-एक करके दिलाना चाहता हूं।

श्रीमन्, मुरादाबाद में जो दंगा हुआ, दंगे की जानकारी के संबंध मे एक डाक्यूमेंट आप के सामने पेश करना चाहता हूं और इस संबंध में कुछ तथ्य आपके सामने रखना चाहता हूं। जिस दिन मुरादाबाद में दंगा हुआ उस के 15 दिन पहले मैं बनारस में

मौजूद था । बनारस में बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के कुछ लड़के हमसे मिले और उन लोगों ने कहा कि नेता जी, यहां पर बहुत जबर्दस्त दंगा होने की साजिश की जा रही है । मैं दिल्ली में आया और सदन की कार्यवाही चल रही थी । दिनेश सिंह जी यहां मौजूद हैं, सेन्ट्रल हाल में मैंने कहा, आते ही कि दिनेश सिंह जी, आप प्रधान मंत्री जी को मेरी बात मेरी तरफ से बता दीजिए कि देश में और उत्तर प्रदेश में खास तौर से, बहुत जबर्दस्त दंगे होने वाले हैं । दिनेश सिंह जी ने कहा कि आपके पास क्या प्रमाण हैं ? मैंने उनको कुछ बातें बताई । हमारा संबंध भी कुछ छात्र आंदोलनों से जुड़ा हुआ है, हमारा जीवन भी राजनीति से जुड़ा हुआ है, हम भी देश के ऊपर नजर रखते हैं, हमारे साथ हर दल के किसी न किसी से मिलना-जुलना होता है इस लिए मैं आपको डेफिनिट बता रहा हूं कि कुछ न कुछ उपद्रव होगा । यही बात मैंने बनारस के--आप रिकार्ड मंगा कर देख सकते हैं--एस० एस० पी० को बतायी कि तुम सावधान रहना, तुम नये-नये बनारस में आये हो, तुम्हारे सिर पर तलवार लटक रही है, तुम्हारे यहां बहुत बड़ा दंगा होने वाला है । एस० एस० पी० ने कहा कि मैं इस के लिए बहुत शुक्रगुजार हूं । उपसभापति जी, मैं आपके माध्यम से अपनी बात के समर्थन में उत्तर प्रदेश विधान सभा में जिस विधायक ने विश्वनाथ प्रताप सिंह के लिए इस्तीफा दिया है उन का एक वक्तव्य पढ़ कर आपके सामने सुना रहा हूं । यह वक्तव्य 4 अक्तूबर, 1980 को विधान सभा में श्री श्यामलाल वाजपेई ने दिया । यह विधायक हैं । यह क्या कहते हैं--

"श्री श्याम लाल वाजपेई : मुझे बताया गया, माननीय अधिष्ठाता महोदय जरा गौर से सुनें, बड़ी गम्भीर बात है । मुझे बाया गया कि आज उत्तर प्रदेश की पुलिस उत्तर प्रदेश में विद्रोह करने वाली है । बात समझ में नहीं आयी । मगर दिल्ली में जिस ने मुझ से बताया वह एक राष्ट्रीय स्तर का आदमी था ।

श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त : नाम बता दीजिए ।

श्री श्याम लाल बाजपेई : नाम बताना ठीक नहीं है । तो मान्यवर, जब मैं लखनऊ आया तो वास्तव में मुझे विश्वास हुआ कि यह षड़यंत्र ही था । माननीय अधिष्ठाता महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन को बताना चाहता हूं कि यह केवल पुलिस षड़यंत्र तक ही सीमित नहीं रहा, इसको हिन्दू मुस्लिम के षड़यंत्र का रूप दे दिया गया । और मान्यवर, यह षड़यंत्र का रचने वाला इस मौजूदा शासन का ही एक आदमी है जो कि मुख्य मंत्री बनना चाहता था और उस का विदेशों से भी सम्बन्ध है । वह चाहता था कि प्रदेश की कानून और व्यवस्था भंग हो । इसकी वजह यह है कि इस तरह की हरकतें कर के माननीय मुख्य मंत्री को बदनाम करना चाहता था । लेकिन ईश्वर की कृपा थी कि उसने मु० मंत्री जी को बदनाम होने से बचा लिया ।"

यह विधान सभा की प्रोसीडिंग मैंने पढ़ कर सुनायी । दूसरे एक विधायक हैं उनका भी सुन लें ।

श्री उपसभापति : बिस्तार से पढ़ेंगे तो कभी अन्त नहीं होगा । आप प्रश्न पूछिए (*Interruptions*)

श्री रामेश्वर सिंह : आप सत्ता पक्ष को बचाते हैं । मैं सीधे-सीधे इल्जाम नहीं लगाता । जब मैं खड़ा होता हूं... (*Interruptions*) आप कहें तो मैं चला जाऊं।

श्री उपसभापति : आप इतनी डिटेल में नहीं जा सकते । प्रोसीडिंग्स छपी हुई हैं, सब लोग जानते होंगे । पब्लिक डाक्यूमेंट है । आप प्रश्न पूछिए, प्रोसीडिंग्स मत पढ़िए ।

श्री रामेश्वर सिंह : एक विधायक है ।

एक माननीय सदस्य : विधायक कौन पार्टी के हैं ।

श्री रामेश्वर सिंह : यह अनवार अहमद खा० है । विधान सभा में 7 अक्तूबर को उनका भाषण है जिन्होंने इस बात को तस्दीक किया है । यह रिकार्ड मैं आप को दे रहा हूं । मेरा एक सवाल है ।

यह कहते हैं कि कानून और व्यवस्था ठीक है । बागपत से चलिए । मैं बागपत को अभी छोड़े दे रहा हूं । जैल सिंह ने बागपत के मामले में कहा कि रेप नहीं हुआ । डाक्टर ने कहा कि गालिबन हुआ । ठीक है, वह मामला अभी [illegible] रहा है ।

अब मैं ले जा रहा हूं बिरड़ी उड़ीसा में ।

श्री हरी शंकर भाभड़ा : गिरिडीह उड़ीसा में नहीं है, बिहार में है ।

श्री रामेश्वर सिंह : बिरड़ी उड़ीसा मे है । वहां महापात्र पत्रकार हैं । उत्तर प्रदेश में कौन अभियुक्त है, वहां कौन अभियुक्त है । "एक अभियुक्त दिवाकर नायक बिरडी ब्लाक कांग्रेस का अध्यक्ष है । एक अन्य अभियुक्त नंद महंती उस क्षेत्र से जीते हुए 'इंका' संसद् सदस्य लक्षण मल्लिक का मुख्य चुनाव एजेंट था ।" जो तथ्य हैं उनके सपोर्ट में मैं यह बता रहा हूं । यह 'दिनमान" है इसी हफ्ते का ।

श्री उपसभापति : वह बात सब को मालूम है ।

श्री रामेश्वर सिंह : ठीक है, यह बात सब को मालूम है ।

एक माननीय सदस्य होम मिनिस्टर को नहीं मालम है ।

श्री रामेश्वर सिंह : हमारे मंत्री जी और हमारी प्रधान मंत्री जी अल्पसंख्यकों की बड़ी भक्त हैं । मै उन को मुबारकबाद देता हूं और वे बहुत बहादुर प्रधान मंत्री हैं इसमें कोई दो राये नहीं हैं । इसका विश्लेषण मैं दो मिनट बाद करूंगा । उन के जैसा कोई बहादुर प्रधान मंत्री धरती पर नहीं हुआ ।

श्री उपसभापति : आप प्रश्न करिए ।

श्री रामेश्वर सिंह : यह श्रीमन्, बागपत से भी बड़ा काड बनारस में हुआ । यह है जमालुद्दीन की 24 वर्षीय पत्नी असरुना मीना ने बताया कि पुलिस वालों ने जबरदस्ती उसका हाथ पकड़ कर पटक दिया और उस के साथ बलात्कार किया और वह अल्पसंख्यक ही है और यह औरत है । इस के बाद यह शमशुद्दीन की 28 वर्षीय पत्नी नज्मनन्निसा है । यह भी कहती है कि मेरे साथ पुलिस वालों ने पकड़ कर बलात्कार किया । यह करेंट है । यह मेरा पत्र नहीं है । यह माननीय गृह मंत्री जी का अखबार है और उनका सपोर्टर है । यह हैं बिहार के विधायक ।

एक माननीय सदस्य : कांग्रेस 'आई' के ।

श्री रामेश्वर सिंह : जी हां, इन्दिरा कांग्रेस के विधायक राम जी सिंह का पुत्र, वह एक औरत के साथ बलात्कार करता है और इस में उस औरत का फोटो भी छपा है और यह कांग्रेस के एम एल ए का लड़का है । *(Interruption)* अब तीसरा यह है । यह हैं कांग्रेस के विधायक भोला पांडेय, जिन्होंने अपने नेम प्लेट पर लखनऊ मे अपने मकान पर लगा रखा है--भोला पांडेय विमान अपहरणकर्ता *(Interruptions)* आठ अक्तूबर को, इसी आठ अक्तूबर को. . . *(Interruption)* कैसे ला एंड आर्डर खराब हो रहा है, कैसे लोगो को आपने टिकट दिया है और वे क्या करते हैं इसको आप देखें । उन्होंने वहां के एक मजिस्ट्रेट को पकड़ कर पीटा, पटक कर और उस के चलते सारा कोर्ट और कचहरी चार दिन तक बंद रहा । और जब कमिश्नर गये तो वहां पर काम शुरू हुआ ।

श्री उपसभापति : अब समाप्त करिए ।

श्री रामेश्वर सिंह : उनकी बात तो कह लेने दीजिए ।

श्री उपसभापति : तो आप की पार्टी को समय नहीं दिया जायेगा । आप ऐसा न करिये । इतने बड़े देश में आप अगर एक-एक घटना को लेंगे तो यहां तो बहुत समय लग जायेगा । ऐसा नहीं हो सकता । मैं इसकी इजाजत नहीं दूंगा ।

श्री रामेश्वर सिंह : श्रीमन्, तथ्यों को तो सुनिए ।

(Interruption)

श्री उपसभापति : आप प्रश्न करिये । आप दस मिनट बोल चुके हैं । अब आप दो मिनट में खत्म करिए कृपा कर के । मैं एक-एक घटना का विवरण देने के लिए टाइम नहीं दे सकता ।

श्री रामेश्वर सिंह : आप मेरे साथ ही ऐसा बर्ताव क्यों करते है । कल ही वह 25 मिनट तक बोले है । आप दूसरो को समय देते हैं, मुझे नही देना चाहते ।

श्री उपसभापति : 25 मिनट तो भूपेश गुप्त जी बोले थे, वह नहीं बोले थे । एक-एक घटना को ले कर नहीं चलेगा । आप प्रश्न पूछिए *(Interruption)* एक-एक घटना की बात ले कर तो आपको दिन भर लग जायेगा । इतना समय मैं नहीं दे सकता ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर (उत्तर प्रदेश) : कांग्रेस के विधायकों का विवरण देंगे तो वर्षो लग जायेंगे ।

श्री उपसभापति : वह वर्णन बहुत कर चुके ।

श्री रामेश्वर सिंह : रोहतास जिले में कुछ लोगों ने एक औरत के साथ बलात्कार किया और यह भी इस करेंट में है । इस तरह से . . .

(Interruption)

श्री उपसभापति : इन घटनाओं के परिपेक्ष्य में क्या हो रहा है उसके बारे में आप पूछिए । यह घटनायें तो सब को पता हैं ।

श्री रामेश्वर सिंह : मैं आपको ले आ रहा हूं सही जगह पर और मैं दो मिनट में समाप्त कर दूंगा । आप जो चाहते हैं वही हो जाये ।

श्रीमन्, कहां चले गए हमारे सामने से श्री अनन्त प्रसाद शर्मा जी, मैं उन्हीं से बात करना चाहता हूं । वह कल

लड़कियों के लिए ब्यूटी देख रहे थे। वह ब्यूटी का चुनाव कर रहे थे। ला एण्ड आर्डर तभी ठीक होगा जब तांत्रिक युग में तांत्रिकों के चक्कर में राजपुरुष नहीं पड़ेंगे। आज तो राजनीतिक लोग भोग-लिप्सा में लिप्त हो गए। यह देखिए, यह है प्रधान मंत्री जी का स्वामी जी के साथ फोटो . . . (*Interruption*)

श्री उपसभापति : आप अनावश्यक चीजें कह रहे हैं। आप प्रश्न पूछिए. . .

(*Interruption*)

श्री रामेश्वर सिंह : ये हैं ज्ञानी जैल सिंह जी . . .

(*Interruptions*)

श्री उपसभापति : आप लोग कृपया शान्त रहें, उनको बोलने दीजिए।

(*Interruptions*)

श्री रामेश्वर सिंह : श्रीमन्, इसको मैं टेबुल पर रख रहा हूं। सीताराम केसरी जी मुंह देख रहे हैं। . . . (*Interruption*) जब राज-पुरुष लोग एयर लड़कियों के लिए कहते हैं कि साल भर में उनकी एक बार कौमार्य की परीक्षा होती है कि कुमारी है कि नहीं तो ये जो स्वामी लोग हैं ये दिल्ली में ही क्यों पड़े हुए हैं, ये लोग पर्वतों में जायें, गांवों में जायें, दिल्ली में पड़े हुए हैं तो ये भोग-लिप्सा में पड़े हुए हैं। ये ब्रह्मचारी 18 साल की उम्र में . . .

(*Interruptions*)

श्री उपसभापति : श्री रामेश्वर सिंह जी, यह बात नहीं की जाएगी। . . . .

(*Interruption*)

श्री रामेश्वर सिंह : केन्द्रीय गृह मंत्री . . .

(*Interruption*)

श्री उपसभापति : अब आप अपना प्रश्न पूछिए। आप इन बातों को छोड़िए।

श्री रामेश्वर सिंह : ये मक्खन मिला रहे हैं। . . . (*Interruptions*) ये कृष्ण लीला कर रहे हैं। कृष्ण लीला करने वाले लोग ला एण्ड आर्डर क्या ठीक करेंगे। . . .

(*Interruptions*)

श्री उपसभापति आप अनावश्यक बातें कह रहे हैं। यह नहीं लिखा जाएगा। आप कृपया अपना स्थान ग्रहण कीजिए। . . . (*Interruptions*) इसमें ला एण्ड आर्डर का कोई ताल्लुक नहीं है। माननीय मंत्री जी जवाब दें।

श्री रामेश्वर सिंह : (Continued to speak

श्री उपसभापति : यह बातें नहीं लिखी जायेंगी, यह इर्रेलेवेंट बात है। यह मैं एलाऊ नही करूंगा। माननीय मंत्री जी जवाब दें। . . .

(*Interruptions*)

मंत्री जी आप जवाब दीजिए।

श्री रामेश्वर सिंह : ये मंत्री लोग करप्ट हैं। कौन सा मंत्री ऐसा है जिसका फोटो इसमें नहीं है।

(*Interruptions*)

श्री उपसभापति : जवाब सुनिए। सारी बता इर्रेलिवेंट है।

(*Interruption*)

श्री रामेश्वर सिंह : मैंने आपको फोटो दिए हैं।

(*Interruptions*)

श्री उपसभापति : आप बैठ जाइए। मैं आपको इजाजत नहीं देता। आप स्थान ग्रहण करिए।।

(*Interruption*)

श्री रामेश्वर सिंह : आप बोलने नहीं देंगे ?

श्री उपसभापति : 15 मिनट से ज्यादा हो गए हैं आपको बोलते हुए। इनका ला एंड आर्डर से कोई संबंध

नहीं है । सारी इर्रेलिवेंट बात कह रहे हैं ।

(*Interruptions*)

श्री सत्यपाल मलिक (उत्तर प्रदेश) : मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। मैं यह जानना चाहता हूं कि रामेश्वर सिंह जी ने जो बात कही है आखिरी वक्त में, वह रिकार्ड में रखी गई है या नहीं ।

(*Interruptions*)

श्री उपसभापति : आपने जो कहा है मैं उसे देख लूगा ।

(*Interruptions*)

श्री सत्यपाल मलिक : उसमें असंसदीय क्या है ?

श्री उपसभापति : मैं ने नही कहा कि कि वह असंसदीय है ।

(*Interruptions*)

श्री कलराज मिश्र (उत्तर प्रदेश) : रामेश्वर सिंह जी ने जो हवाला दिया उसके बारे में आपने कैसे कह दिया कि वह रिकार्ड में नहीं जाएगा ।

(*Interruption*)

श्री रामेश्वर सिंह : हर फोटो की जांच हो ।

(*Interruption*)

श्री उपसभापति : आप स्थान ग्रहण करिए । मंत्री जी, आप जवाब दीजिए ।

(*Interruption*)

श्री रामेश्वर सिंह : यह सरकार भ्रष्टाचारी है । सब चरित्रहीन हैं ।

(*Interruption*)

श्री सत्यपाल मलिक : मंत्रियों क भोग लिप्सा की जो उन्होंने बात कही है वह रिकार्ड में है या नहीं, यह मेरा व्यवस्था का प्रश्न है । (*Interruptions*) रामेश्वर सिंह जी ने जो तस्वीरें दिखाई, मंत्रियों के आचारण के बारे में जो बातें कहीं आपने किस आधार पर कहा कि रिकार्ड में नहीं जाएगा । यह सिर्फ हम आपसे जानना चाहते हैं . . .

(*Interruption*)

श्री उपसभापति : तस्वीरें हमन अलाऊ नहीं की और न किताबें टेबल पर रखने के लिए अलाऊ किया ।

(*Interruption*)

श्री रामेश्वर सिंह : ब्रह्मचारी के खिलाफ फोटो छपे हैं ।

श्री सीताराम केसरी : माननीय सदस्य ने जो व्यवहार किया है. . .

(*Interruption*)

श्री रामेश्वर सिंह : मैंने कुछ नहीं किया है ।

(*Interruption*)

श्री उपसभापति : आप सुन लीजिए । बार-बार न बोलिए ।

(*Interruption*)

श्री रामेश्वर सिंह : मैंने किसी मंत्री के खिलाफ कोई व्यक्तिगत आक्षेप नहीं लगाया है । जो उनकी फोटो छपी है वह मैंने टेबल पर और इस सदन में रखी है । किसी मंत्री से मेरी दुश्मनी नहीं है । देश टूट रहा है । रास लीला कर रहे हैं आप लोग ।

(*Interruption*)

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : आपसे मैं सहमत हूं कि वह रिकार्ड मे न जाए क्योंकि जो कुछ मंत्री कहते हैं वह स्टेट सीक्रेट होता है । स्टेट सीक्रेट सामने नहीं आना चाहिए ।

(*Interruptions*)

श्री उपसभापति : मंत्री जी आप जवाब दीजिए ।

श्री योगेन्द्र मकवाणा : आदरणीय उपसभापति जी, आनरेबुल मेम्बर ने कोई क्वेश्चन तो रखा नहीं इसलिए किसी सवाल का जवाब देने की बात नहीं है । उन्होंने कुछ एलीगेशन्स लगाये हैं । इन एलीगेशन्स को हम सही मानते नहीं है इसलिये उनका कोइ दबाव देने की जरूरत नहीं है ।

श्री उपसभापति : श्री चन्द्र झा ।

श्री रामेश्वर सिंह: श्रीमान् मेरा कहना यह है कि. . .

श्री उपसभापति : आपको अब मैं बोलने की इजाजत नहीं देता । श्री रामेश्वर सिंह जो कुछ बोलेंगे वह नहीं लिखा जाये । आपको कंट्रोल करने को इसके अलावा कोई तरीका नहीं है ।

श्री रामेश्वर सिंह : *(continued to speak)*

श्री शिव चन्द्र झा: उपसभापति महोदय, . . . *(Interruptions)*

श्री रामेश्वर सिंह : श्रीमन्, मेरा पौइन्ट आफ आर्डर है ।

श्री उपसभापति : अगर आपका कोई पाइन्ट आफ आर्डर है तो बोलिए ।

श्री रामेश्वर सिंह : श्रीमन्, मेरा पौइन्ट आफ आर्डर यह है कि बलिया के विधायक ने वहां के मजिस्ट्रेट को बुला कर पीटा है और वहां जो हालत हो रही है उसको देख कर क्या आप उसके खिलाफ कोई कार्यवाही कर रहे हैं ?

श्री उपसभापति : यह कोई पौइन्ट आफ आर्डर नहीं है ।

श्री योगेन्द्र मकवाणा : ऐसी कोई कम्प्लेन्ट हमारे पास नहीं आई है । ऐसी कोई कम्प्लेन्ट आएगी तो कार्यवाही करेंगे ।

श्री रामेश्वर सिंह : श्रीमन्, मेरा कहना यह है कि . . .

श्री उपसभापति : यह नहीं लिखा जायेगा ।

श्री रामेश्वर सिंह. *(continued to speak)*

श्री कल्पराज मिश्र : श्रीमन्, इनकी बातों का उत्तर नहीं दिया गया है।

श्री उपसभापति : अब आप अपना स्थान ग्रहण कीजिये । श्री शिव चन्द्र झा ।

श्री शिव चन्द्र झा (बिहार) : उपसभापति महोदय, यहां पर बहुत सी बातें कही गई हैं और बहुत से तथ्य आ गये हैं जिनके संबंध में हम चाहते हैं कि उत्तर आये, लेकिन मंत्री महोदय कतरा कर भाग जाते हैं, जवाब नहीं देते हैं क्योंकि उनमें साहस नहीं है। मेरे पास भी कुछ आंकडे हैं। अगर आप इजाजत दें तो मैं एक एक करके आपको बताने लग जाऊं । यहां पर यू० पी० की बातें कही गई है । लेकिन मैं सिर्फ मुख्य बातों की ओर ही आपका ध्यान खींचना चाहता हूं । पहली बात यह उठाई गई है कि इस चर्चा में प्रधान मंत्री जी का नाम लिया गया है। हमारे देश में कानून और व्यवस्था की स्थिति ऐसी बिगड़ रही है कि अब यह यकीन होने लगा है कि सन् 1977 में जो तूफान भारत की जनता ने पैदा किया था उससे बड़ा तूफान अब भारत के क्षितिज पर मंडरा रहा है और सन् 1977 में जो हुआ एक तरह से रिहर्सल थी, लेकिन असली तूफान तो निश्चित रूप से आने वाले दिनों में आने वाला है। जिस रफ्तार से देश की स्थिति बिगड रही है वह इस बात की ओर संकेत करती है । हमारे देश की हालत इसलिये बिगड़ रही है कि यह सरकार बिलकुल निकम्मी है, इनएफिशिएन्ट है और इसका दृष्टिकोण ही चौपट है । मैं समझता हूं कि इस स्थिति के बिगडने के चार कारण हैं । उन कारणों को यह सरकार हटा दे तो देश की परिस्थिति ठीक हो जायेगी । सारे देश में कानून और व्यवस्था की

[श्री शिव चन्द्र झा]

परिस्थिति बिगड़ने का पहला कारण यह है कि इस सरकार का दृष्टिकोण साफ नहीं है। कहने का मतलब यह है कि जिन लोगों के हाथ में हकूमत की बागडोर है उनका कोई दर्शन नहीं है और उनका अवैज्ञानिक दृष्टिकोण है। उनका दृष्टिकोण साफ नहीं है, अनसाइंटिफिक है। उदाहरण के लिये मैं कहना चाहता हूं कि नार्थ इस्टर्न रीजन के बारे में और आसाम के बारे में समस्याओं को हल करने की जब बात आई तो शायद आपको याद होगा जब आसाम का एजीटेशन शुरू हुआ था तो उसी वक्त हम लोगों ने कहा था कि इस समस्या पर विचार करने के लिये एक ट्राइपार्टाइट बैठक बुलाई जाय जिसमें सरकार, विरोधी दल और एजीटेशन करने वालों को शामिल किया जाये। आप रिकार्ड देख सकते है। लेकिन सरकार ने इस बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। अब परिस्थिति बिगडी तो सरकार ने यह ट्राइपार्टाइट बैठक बुलाई। मेरे कहने का मतलब यह है कि अगर सरकार का दृष्टिकोण साफ होता और सरकार ने हमारे सुझाव पर ध्यान दिया होता तो आसाम की समस्या शुरू होते ही हल कर ली जाती। चूंकि सरकार का दृष्टिकोण अवैज्ञानिक था, चौपट था, उनके पास दर्शन नाम की कोई चीज ही नही थी, इसलिये परिस्थिति बिगडती जा रही है। पहला कारण तो देश को स्थिति बिगडने का यह है। और दूसरा कारण यह है कि सरकार का जो प्रशासन का स्ट्रक्चर है वह आउट-डेटेड है। वह बहुत पुराना हो चुका है, इस मशीनरी पर जंक लग चुका है। आप के इस नोटिस आफिस से लेकर और टेबल आफिस से लेकर जहां भी आप चले जाइये, सारे प्रशासन पर जंक लग चुका है। एडमिनिस्ट्रेटिव रिफार्म कमीशन ने एक रिपोर्ट दी। उस पर कुछ काम होता है। लेकिन मेरा कहना यह है कि फिर से एक दूसरा एडमिनिस्ट्रेटिव रिफार्म कमीशन बहाल किया जाना चाहिये। हमारे देश मे स्थिति यह है कि प्रशासन जिस गति से बदलना चाहिये, जिस रफ्तार से काम होना चाहिये उस रफ्तार से काम नही हो रहा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि प्रशासन के स्ट्रक्चर को बदला जाये। इसके लिये जरूरी है कि एक दूसरा एडमिनिस्ट्रेटिव रिफार्म कमीशन बहाल किया जाय। नवीन परिस्थितियों के सदर्भ में नये सिरे से प्रशासन पर विचार किया जाय।

•

तीसरा कारण यह है कि इसी प्रशासन का एक अंग पुलिस का महकमा है। हम लोग चाहते है कि हमारे समाज में जो टोटालिटेरियन विग है उसको डेमोक्रेटाइज करने की जरूरत है। लेकिन सरकार उधर ध्यान नही देती है। जो पुलिस कमीशन की रेकमेन्डेशन्स है उनको भी लागू नही कर रही है। और बातो को छोड़ दें उन्होंने अपने जवाब मे कहा है कि हम माडर्नाइज कर रहे है। क्या कर रहे हैं माडर्नाइज ? बहुत सी रेकमेन्डेशन्स पुलिस कमीशन की है उन्हे भी सरकार कार्यान्वित नही कर रही है। हमें सारे महकमों में बुनियादी परिवर्तन लाना है उसको डेमोक्रेटाइज करना है और उसके लिये जरूरी है कि फिर से एक कमीशन बहाल किया जाये। आज देश मे परिस्थितियां बहुत बिगड़ रही है, पुलिस का महकमा चौपट है और बहुत जुल्म हो रहे हैं। पुलिस जुल्म के संबध में रोहतास जिले की बात आई है। इस संबंध में

[श्री शिव चन्द्र झा]

टाइम्स आफ इंडिया में जो समाचार आया है, भागलपुर की जेल आथारिटी ने अपराधियों की आंखें पुलिस द्वारा निकाले जाने की पुष्टि की है। इसका जिक्र कल मैंने अपने स्पेशल मेंशन में भी किया था। स्थिति इस तरह से बिगड़ रही है कि हमें भय है कि कहीं पोलिटिकल लीडर्स की आंखें भी न निकालनी शुरू की जायें। आज पुलिस का महकमा तानाशाह बन गया है, वैस्टीलेटी और बारबरिज्म का राज्य कायम है। रोहताश जिले की बात आ गई है ऐसे दूसरे उदाहरण है जिससे पता चलता है कि पुलिस के जुल्म बढ़ रहे है। यह तीसरा कारण है।

चौथा और बड़ा कारण है सोशल और एकानामिक सेट अप। आज वीकर सेक्शन, हरिजन और आदिवासियों पर जुल्म ढाये जाते हैं। यहां ढोल पीटा जाता है कि हम वीकर सेक्शन के लिये काम कर रहे हैं और उनके उत्थान के लिये 20-सूत्री कार्यक्रम और 4-सूत्री कार्यक्रम क्रियान्वित किये जा रहे हैं। इसके उत्सव मनाये जाते हैं। उद्घाटन किये जाते है जिलों में। लेकिन जैसा कि मैंने बताया बिहार, यू० पी० और दूसरे राज्यों में इन लोगों पर जुल्म ढाये जा रहे है। सरकार की मशीनरी जर्जर है। उनके उत्थान के लिये क्या खास कदम उठाये जाने चाहियें ताकि वीकर सेक्शन में समाज में बराबरी पर आ सकें इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। बहुत से कदम हैं, इस बारे में बहुत कुछ कहा जा चुका है, पंडित जवाहर लाल नेहरू बोल कर गये है तो कम से कम पंडित जी की जो बातें हैं उनको ही कार्यान्वित कर दें। पंडित जी ने सोशल और एकानामिक सिस्टम बदलने के लिये जो कहा था वह नहीं हो रहा है, उसे आप क्यों नहीं कर रहे है। महोदय, जब से यह सरकार आई है तब से इतनी गोलियां लोगों के ऊपर चली हैं जितनी कि जनता सरकार के पूरे शासन में भी नहीं चलीं। करफ्यू सब जगह पर लगा हुआ है। कानपुर, करफ्यू के मातहत है, मुरादाबाद में शायद अभी भी होगा; सरकार की पुलिस द्वारा गोली चलाकर कई लोग मारे गये हैं। इस तरह की घटनाओं को हम दिन रात आंखों के सामने देख रहे हैं। आज आप रात को 10 बजे के बाद 10 रुपये का नोट लेकर चले तो आदमी सुरक्षित अपने को नहीं समझता। परिस्थितियां जिस तरह से बिगड़ रही है उसको देखकर लोग हम से कदम-कदम पर पूछते है कि यह सब क्यों है। हम तो कहते हैं कि और दो इंदिरा गांधी को वोट, जाओं उनके पास, हमसे क्यों कहते हो। जाकर इन्दिरा जी का घेराव करो, उनकी पार्टी के लोगों का घेराव करो . . .

श्री उपसभापति : अब आप समाप्त कीजिये।

श्री शिव चन्द्र झा : ये परिस्थितियां हैं। उपसभापति महोदय, मैं आपको यकीन दिलाना चाहता हूं और दावे के साथ कहना चाहता हूं कि आज समाज मांग रहा है एक नया परिवर्तन, एक नई क्रांति समग्र क्रान्ति। समाज मांग रहा है वह चीज जिसका नारा हम लोगों ने लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी के मातहत उनके नेतृत्व में दिया था। उन्होंने 1976 में जो रास्ता हमें बताया था उस समय वह तो एक रिहर्सल था अब ड्रामा होने वाला है। यह उत्तर भारत के काश्मीर से कन्याकुमारी तक और ओखा से मनीपुर तक होगा। इसलिये मैं चाहता हूं कि मंत्री जी इन सब बातों की सफाई दें।

श्री योगेन्द्र मकवाणा : माननीय उपसभापति जी, माननीय शिव चन्द्र झा जी ने कोई स्पेसिफिक क्वेश्चन तो पूछा नहीं . . .

श्री शिव चन्द्र झा : मैंने सवाल पूछे हैं। एडमिनिस्ट्रेटिव रिफार्म कमीशन के बारे में और सरकार के दृष्टिकोण के बारे में . . .

श्री योगेन्द्र मकवाणा : माननीय सदस्य ने कोई प्रश्न पूछा नहीं है उन्होंने सुझाव दिये है जिनको मैंने नोट कर लिया है। जहां तक ला एंड आर्डर का सवाल है इस बारे में मैंने काफी बता दिया है अपने स्टेटमेंट में ।

श्री शिव चन्द्र झा : मेरा सवाल है, एडमिनिस्ट्रेटिव रिफार्म कमीशन के बारे में (*Interruptions*) पुलिस के बारे में भी जो रिकमेंडेशंस हैं, उनके बारे में भी पूछा था ।

श्री उपसभापति : सवाल तो नहीं है, सुझाव है ।

(*Interruptions*)

श्री योगेन्द्र मकवाणा : सब मैंने नोट कर लिया है ।

श्री शिव चन्द्र झा : सवाल बहुत स्पष्ट हैं । कुछ तो कहें (*Interruptions*)

श्री योगेन्द्र मकवाणा : सब सुझाव मैंने नोट कर लिए हैं ।

श्री शिव चन्द्र झा : मैंने इतने सवाल किए हैं, कुछ तो हाउस में उनके बारे में भी कहें ।

श्री उपसभापति : आपका जवाब दे दिया है ।

(*Interruption*)

श्री शिव चन्द्र झा : सारी परिस्थिति को आप मोकरी बना रहे हैं (*Interruptions*) मैंने एडमिनिस्ट्रेटिव रिफार्म्स कमीशन के बारे में पूछा है, बहाल करेंगे या नहीं ?

श्री योगेन्द्र मकवाणा : वही तो विचार कर रहे हैं। आपने जो कहा वह मैंने नोट कर लिया है ।

श्री शिव चन्द्र झा : नोट क्या करते हैं

(*Interruptions*)

श्री योगेन्द्र मकवाणा : मुझ से वे स्पेसेफिक एश्योरेंस मांग रहे है। उनके सुझावों को मैंने नोट कर लिया है
Let me examine them.

श्री शिव चन्द्र झा : पुलिस के बारे में रिकमेंडेशंस को क्यों नहीं लागू कर रहे हैं, उनको करना है या नहीं

(*Interruption*)

श्री उपसभापति : आपको जवाब दे दिया है । (*Interruptions*)

श्री शिव चन्द्र झा : उनको जवाब देना चाहिए ।

श्री उपसभापति : अब और क्या उत्तर होगा । आपका उत्तर तो दे दिया है ।

श्री शिव चन्द्र झा : आप जवाब दें कि पुलिस वालों के बारे में क्या कर रहे हैं ? (*Interruptions*) पुलिस के स्ट्रक्चर में परिवर्तन होगा या नहीं (*Interruptions*)

SHRI YOGENDRA MAKWANA: I said we are examining the suggestions made by the Police Commission. Whatever suggestions you have made will also be examined.

श्री शिव चन्द्र झा : सोशयो इकोनोमिक सुधारों के बारे में कुछ कहें ।

श्री उपसभापति : अब हो गया । श्री कुलकर्णी जी ।

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI (Maharashtra): May I now proceed with my question?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You may proceed.

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: Thank you. At the outset, I want to remark on the statement laid by the hon. Minister of State for Home Affairs who is supposed to be a powerful Minister. What he said is that the law and order position is improving. I think either his eyes are weak or he is deaf so that he is

[Shri Arvind Ganesh Kulkarni]
not able to see and read or hear because all over the country the law and order is deteriorating. Do not compare yourself with Janata because you have come to power with the promise that you will provide a Government that will rule. Now everybody feels that the Government is not ruling. In Delhi every day we hear of girls lost or boys lost or ladies taking morchas. And you are, like Nero fiddling while Rome is burning. Do not take that attitude. Do not unnecessarily criticise the opposition. You have got a massive majority. This is one aspect.

Now I am asking my question. Before that I want to say that Mrs. Indira Gandhi, the Prime Minister, is supposed to have the confidence and ability to rule and I myself believe so. I do not have any doubt about it. But sycophants, hangers-on and charlatans in her Party are making her weak and they are pushing her into the Tantrik hands...

SHRI HARISINH BHAGUBAVA MAHIDA (Gujarat): What is the question?

श्री अरविन्द गणेश कुलकर्णी : महीडा साहब हमको बचाओ जरा ; यह क्या कर रहे हैं आप ?

I am prefacing my question. So, this is the problem. Now Shrimati Usha Malhotra is also there. There is a photograph..

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Do not refer to photographs

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: The photograph is that of one Sadachari and Shri Kedar Pande. The whole photograph is sweet because Shrimati Usha Malhotra is also there. Otherwise, who will bother about that bearded Swami and Mr. Kedar Pande? It has added grace. Congratulations to you, my dear friend, Mrs. Usha Malhotra. But the point is this: Don't push your Prime Minister into the hands of tantriks and the sycophants including the Ministers. You people are pushing her into the hands of Kamal Nath's and other fellows Please tell them: "Hands off on this business.". Mrs. Indira Gandhi, left to herself, can rule. But the sycophants and the hangers-on do not want her to rule; you people do not want her to rule. (*Interruptions*)

SHRIMATI USHA MALHOTRA (Himachal Pradesh): Sir, What is this? What is he saying? He is calling us as sycophants. (*Interruptions*).

SHRIMATI MONIKA DAS (Karnataka): Sir, what is this? What is he saying? (*Interruptions*).

SHRI HARISINH BHAGUPAVA MAHIDA: Sir, what is he saying? He cannot take the liberty of saying all these things. (*Interruptions*).

SHRIMATI USHA MALHOTRA: Sir, on a point of order. (*Interruptions*).

SHRIMATI MONIKA DAS: Sir, on a point of order. (*Interruptions*).

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: Sir, the question is whether the Minister of Home Affairs...

SHRIMATI MONIKA DAS: Till two years before you were with us (*Interruptions*). Mr. Kulkarni, till two years before you were with us, you were in our party. Don't forget that. You were with us only till recently. (*Interruptions*).

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Order please You put your question, Mr Kulkarni.

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: I can't hear what Mrs Monika Das says. (*Interruptions*).

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Order. please. (*Interruptions*). Order, please

SHRIMATI MONIKA DAS: I am telling you this: You tell your Janata friends that you were with us only till two years before. (*Interruptions*)

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: You are also to good to look at. (*Interruptions*). I don't mind (*Interruptions*). I am sorry to express it this way. (*Interruptions*).

SHRIMATI MONIKA DAS: You were with us only. Don't forget that.

(*Interruption*)

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: Why are you bothering me like this?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please put your question, Mr. Kulkarni.

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR: Sir, Mr. Kulkarni said that she is too good to look at. It is wrong. Actually, Sir, he should have said this only that she is good to look at. (*Interruptions*).

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I don't think he meant it that way.

SHRI BHUPESH GUPTA (West Bengal): Sir, why is he daunted when the lady Member is advancing? (*Interruptions*). Why is he daunted by an advancing lady?

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: Sir, I want to know one thing from the Home Minister, Mr. Jail Singh, who has made the statement now, as the Home Minister and not as a frined of the tantriks. I want to know whether it is a fact that there is a foreign hand in the law and order situation being disturbed and in the destabilization in the country or whether there are some domestic hands which are haunting your mind. You do say that. I you think that there is a foreign hand, you have got to be very categorical and you have to categorically say whether it is the USA or whether it is the Arab sheikhs who are having too much money. You have to say categorically who is destabilizing the eastern part of the country, whether it is the CIA or it is the KGB or the Indian people or the Arabs or anybody else, whoever it may. (*Interruptions*). My friend, Mr, Shervani, wants me to include the Chinese also. You have to say whether it is the Chinese who are behind this.

Secondly, Sir, I want to know one more thing. When you say that the law and order situation has improved—I do not want to quote the various examples right from what Mr. Rameshwar Singh quoted—I only want to say one thin. Only yesterday or today, in Bihar, 40 prisoners' eyes were damaged by the police. Is this the police organisation you are heading, my dear friend, Mr. Zail Singh? Is this the damned police organisation that you are heading? Leave aside the ladies and other things. This is totally inhuman and is a shameful thing on the part of the Government whether it is the Bihar Government or the Central Government.

SHRI HAREKRUSHNA MALLICK (Orissa): Yes.

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: Scondly, Sir...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No; thirdly. This is your third point.

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: I am limiting my questions. I have no other interest, you see, because other interests are taken care of. You and I both have no other interests. We have the interests of the country only in mind. I am not a youngster like Mr. Mahia.

Now, Sir, I want to know from the honourable Minister whether the laxity in your own party, the congress (I), is not responsible for this. I want to have a categorical "No" from the Home Minister, Mr. Zail Singh. What action have you taken against that Member, though legally you cannot take any action against your Congress MP, who killed Shrimati Purnima Singh and who took another girl from AIR for a jaunt a car from the hostel? Whether it was with the permission of Mr. Sathe or **not, I do not know.** Or whether he has been really removed or any legal action or any action for moral turpitude has been taken, I do not know. Nothing has been done. Then, about promotions you must have read in the *Time of India* by Khanna. He has stated that undue promotion is given all along the line, that sacking of certain Secretaries and police officers is going on and

[Shri Arvind Ganesh Kulkarni]

you are creating a new history in this country. The Janata has done it. We blamed the Janata. Let us discard the Janata. But you are doing it, who is supposed to be a Government with proper guts and proper power.

Sir, my last question is this. Mr. Zail Singh in all fairness, law and order to the citizen is unbearable; that I can say. Press correspondents are being attacked by Gundu Rao—why Gundu Rao? He is **(*Interruptions*). Some poor chap reported that a chappal was thrown at him, the entire *Indian Express* was attacked and...

AN HON. MEMBER: The Deccan Herald.

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: Yes, the Deccan Herald. What type of boorish Chief Ministers have you brought? A new type. Mr. Antulay in Maharashtra threatened Mr. Madhav Kadkare that if he publishes this or that report, he will be arrested under the MISA or Nationed Security... (*Interruptions*).

SHRI F. M. KHAN (Karnataka): Sir, on a point of order.

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: Go ahead, I know you are defending Gundu Rao; I know it. (*Interruptions*).

SHRI F. M. KHAN: I expected that a senior Member would talk decently in this House. Every time they go on using... (*Interruptions*).

AN HON. MEMBER: You cannot go on saying whatever you like. (*Interruptions*).

MR. DEPUTY CHAIRMAN: If there is anything unparliamentary, I will see to it. (*Interruptions*) Mr. Kulkarni, you conclude now.

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: I know the feelings of my good, young friend. Mr. Khan. Mr. Khan, when you were here and we were there, we were attacking the Janata Party and Advani... (*Interruptions*) I say **because a report came about a chappal having been thrown and you attacked the poor chap—by you I mean Congress (I), Youth Congress people. I would only request you to search your hearts, whether by this way of threatening the Press people you can achieve something. (*Interruptions*).

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That will do.

AN HON. MEMBER: Do you think that whatever is reported in the papers is correct?

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: Whether it is right or wrong.... (*Interruptions*). If the report does not suit you, it is bad. It is a very wrong attitude you are taking. (*Interruptions*).

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude. Mr. Kulkarni.

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: How can I conclude when ** (*Interruptions*).

DR. BHAI MAHAVIR (Madhya Pradesh): To call someone a dog or to call him names is civilized (*Interruptions*).

SHRI N. P. CHENGALRAYA NAIDU (Andhra Pradesh): The tape is there. You go and listen to the tape. (*Interruptions*).

DR. BHAI MAHAVIR: If someone calls somebody a dog or calls him names, somebody else has to return the compliment (*Interruptions*).

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: My question is: Mr. Zail singh, when you attack the Press correspondents, does it and any grace or any laurels you want to attach to Smt. Indira Gandhi, does it attach any grace? The press people have to be protected. I do not quote the Orissa incident or of Bihar or Karnataka or Maharashtra or anywhere

**Expunged as orderd by the Chair.

else. Yesterday, you could not stop that, Mr. Hutchings ejecting the press party. What type of hang-over Hutchings have got of the Empire?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That is a different matter.

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: The British Empire has been liquidated. We have earned our freedom. And we have not got the guts to say to Mr. Hutchings, "you have to get out". They rejected the press party.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude now.

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: The press has got nothing to do...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: This is not concerned with the law and order situation.

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: ...with the agreement between the Crown Prince and the Information and the Broadcasting Organisation. Sir, we are here on our self-respect. We have got to be ashamed of this action.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, Mr. Minister.

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: So, please take action on the various specific points that I have mentioned. About your Punjab-friend, don't protect him. Bring him to the law and then that will be a nice thing, Mr. Zail Singh. Otherwise, you will be a Jail Singh.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Sir, I do not want to go into the allegations made by the hon. Member. It is rightly pointed out by Mr. Khan that a senior Member should not have made such allegations.

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: Sir, I object. Whether the senior Members are allowed to make speeches and make some explanation, we know. Who is Mr. Makwana? He may be a junior Minister. He is also a colleague of mine.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He is giving respect to you.

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: He has equal power and equal authority as I have got.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He is giving respect to you.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Sir, when I say that there is considerable improvement in the law and order situation, I or the Government is not satisfied with the improvement. It is an improvement, a definite improvement. But it is not to our satisfaction. Still we want that it should be improved further. But there is an improvement and it can be shown by figures.

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: Don't quote the statistics.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Without statistics, it is impossible for me to show that there is an improvement. Unless I give the figures, it is not possible. Sir, the hon. Member was criticising the law and order situation particularly in Delhi. Sir, about Delhi, I would like to quote the figures. The figure of robberies in 1978 was 508; in 1979, it was 499; and in 1980, it is 249. The number of dacoities was 51 in 1978. 55 in 1979; and 26 in 1980. In the case of murder, the number was 138, 138 and 146 respectively. Now, these are the corresponding figures of the previous years. We can compare these with the present figures. And if we compare the present figures of the crime situation... (*Interruptions*).

श्री रामेश्वर सिंह : यह ग़लत है; ये हैं फिगर्स जो हमने मंगाया है ।

श्री उपसभापति : हां, ठीक हैं आपके फिगर्स हैं । वह अपने फिगर्स दे रहे हैं । आप बैठिए ।

SHRI YOGENDRA MAKWANA: I do not want to go by the figures of Mr. Rameshwar Singh. He may bring the figures from anywhere. But these are the figures from the records of the police. And I am speaking from the records of the police. So, the figures show that there is a considerable improvement in the law and order situation. But, as I said earlier, Sir, we are not satisfied with the present improvement. We want to improve it still more.

Sir, the hon. Member raised some questions. He raised the question about Bihar, the damage done by the police to certain people who were arrested.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The blinding of the prisoners.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Sir, I also saw the reports in the newspaper today only. We would like to call for the information from the State Government because it is pertaining to a State Government, the State Government of Bihar. And I will call for the information and then I will see what can be done. (*Interruptions*).

SHRI HARI SHANKAR BHABHRA: He has taken four days to get the information when everybody in the country was knowing about it.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Sir, the hon. Member raised a question about the promotion of certain officers. Sir, these promotions are not only by seniority, but the principle followed is seniority-*cum*-merit, and on merit certain officers are promoted, superseding some officers. So, it is an administrative matter.

डा० भाई महावीर : हम कभी-कभी स्पेशल मेंशन में आप का ध्यान ऐसी कुछ घटनाओं की तरफ खींचते हैं जैसे अडौरा में बिहार के अन्दर जो कुछ हुआ और जो मैंने यहां पर रेज किया था । क्या आप वहां की स्टेट गवर्नमेंट से रिपोर्ट मांगते हैं और कार्यवाही की जाती है, या हमारा बोलना रेकार्ड में आ गया और बाकी सब कुछ खत्म हो जाता है ।

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Sir, I can assure the hon. Members that whatever suggestions they make or whatever they otherwise say is taken due note of by us, and we are certainly asking for the reports from the State Government and wherever necessary, we also ask the State Governments to take necessary action.

DR. BHAI MAHAVIR: Will you be good enough to tell us what has happened as a result?

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Sir, in the case of special mentions, it is not a practice of this House to write to hon. Members. But if any hon. Member writes to me, I will certainly reply to him furnishing whatever information that he may seek to know from me. I will certainly reply.

Sir, the other question was regarding...

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: The foreign hand.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: I will come to that also. The other question was regarding the attack on the press. Sir, we are also concerned about it and we highly condemn those who have attacked the press.

DR. BHAI MAHAVIR: You are condemning. Do you know what happened in Bangalore?

SHRI YOGENDRA MAKWANA: We are condemning those who attacked the press and the Chief Minister, as I understand and as I know, is not at all concerned in this matter.

DR. BHAI MAHAVIR: The Youth Congress (I) was.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Please hear me, Sir, I said, Sir, we condemned and at the same time necessary action is taken by the Government concerned where the complaint was lodged with the State Government. So far as the foreign hand is concerned . . .

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: What happened to Mr. Garcha from your party? Has any legal action been taken?

SHRI YOGENDRA MAKWANA: So far as the foreign hand is concerned, the Prime Minister has very clearly stated that there is no foreign hand in the riots of Moradabad or anywhere else. Money certainly came but it came for religious purposes, for some institutions and if anybody says that the money is used for this, that is not right.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, Shri Mathur.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : श्रीमन्, काफी कुछ कहा जा चुका है । जो घटनाएं श्री रामेश्वर सिंह और मेरे दूसरे साथियों ने बतायी है और समाचारपत्रों में आयी हैं उन से दो-तीन बातें साबित हुई हैं ।

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Sir, my Minister wants to say a few words.

गृह मंत्री (ज्ञानी जैल सिंह) : उपसभापति जी, मै इन्टरवीन नही करना चाहता था । बात ठीक चल रही थी । लेकिन हमारे रामेश्वर सिंह जी और कुलकर्णी जी ने कुछ बाते मेरा नाम लेकर कही है, इसलिए मैं चाहता हूं कि मैं उनका ध्यान खींचू ।

श्री अरविन्द गणेश कुलकर्णी : शुक्रिया ।

ज्ञानी जैल सिंह : कुलकर्णी जी ने एक तो यह कहा कि आप ऐसे मुख्य मंत्री रखे हैं, उस में दो-तीन मुख्य मंत्रियों के नाम भी दिये । यह बात बुनियादी तौर पर कुलकर्णी जैसे पार्लियामेंटेरियन की तरफ से नहीं आनी चाहिए थीं । मुख्य मंत्री विधान सभा के मेम्बर होते हैं, वह पार्लियामेंट के मेम्बर नहीं हैं । जो इस सभा का मेम्बर नहीं हैं, जो अपनी बात एक्सप्लेन नहीं कर सकता उसके बारे में कोई बात करना इरेलेवेंट है और नियमों के खिलाफ है । वहां की सरकार की बात यह कर सकते थे, वहां के कार्यक्रम के बारे में कह सकते थे, लेकिन यह नहीं करना चाहिए था । अब भी मैं कहूंगा कि कुलकर्णी जैसे आदमी को यह नहीं कहना चाहिए था ।

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: I do not want to start any discussion, but Zailsinghji knows that the Rajya Sabha has its own conventions. (*Interruptions*).

SHRI HARI SINH BHAGUBAVA: MAHIDA: No, no. There should not be any such conventions when you can speak about persons who are absent. How can there be such a convention? Nobody should be allowed to abuse . . . (*Interruptions*).

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: When Mr. Salve and others were saying so many things, we did not object. So, for Heaven's sake, do not go to that jungle. I would request my friends not to go into the technicalities; that would not serve the purpose.

ज्ञानी जैल सिंह : उपसभापति जी, मैं आप से प्रार्थना करूंगा आप इस हाऊस के कस्टोडियन हैं । आप सब की इज्जत को बचायेंगे और कानूनकायदे से सदन को चलायेंगे । यह आप का काम है । मैं आशा करता था कि इस बात से आप उन को रोक देंगे कि गुन्डू राव का नाम जो उन्होंने लिया है वह उन का नाम **कर के नहीं लेंगे । उन को** कहना अनपार्लियामेंटरी है और आप के मुंह से शोभा नहीं देता । (*Interruptions*) अब आप दूसरी गलती कर रहे हैं । मैं ने आप की पूरी बात सुनी । आप मेरी बात सुन नहीं रहे । मैं आप से आशा करता हूं कि आप का दिल बहुत बड़ा होगा । जितना बड़ा आप का कद है, जितना आप का स्टेचर है उतना ही बड़ा आप का दिल होगा । तो आप मेरी बात सुनिये । आप मेरी तारीफ भी नहीं सुन रहे हैं और मेरी आप निन्दा भी कर गये । उपसभापति जी, जब मैं उनकी तारीफ भी करता हूं तो वह नहीं सुन रहे हैं ।

**Expunged on ordered by the Chair.

श्री अरबिंद गणेश कुलकर्णी : तारीफ आप को मुबारक हो । मैं किसी की निन्दा नहीं करता ।

ज्ञानी जैल सिंह : आप ने कटाक्ष तो किया । निन्दा की बात मैं छोड़ देता हूं । आप ने इशारतन कहा । मैं आप को कहना चाहता हूं कि आप उन शब्दों को निकाल दें । उनको** कहना गलत बात है । वे कर्नाटक के मुख्य मंत्री है । उन का नाम गुन्डू राव है और वह एक शरीफ आदमी हैं, वह एक नेक आदमी है और वह एक प्रापर पर्सन हैं । उनको जनता के वोटों ने वहां पहुंचाया है, चुन कर भेजा है और किसीएक स्टेट के नेता के खिलाफ ऐसी बात कहना उचित नहीं है ।

दूसरी बात उन्होंने अंतुले जी का नाम भी लिया और हमारे राजस्थान के मुख्य मंत्री का नाम भी लिया ।

श्री अरबिन्द गणेश कुलकर्णी : मैंने नाम नहीं लिया । (*Interruption*)

ज्ञानी जैल सिंह : नाम नहीं लिया ? (*Interruption*) हो सकता है . . .

श्री अरबिंद गणेश कुल कर्णी : पहाड़ियां तो गरीब आदमी है । उसका नाम मैं क्यों लूंगा ।

(*Interruption*) I have taken the names of those who attacked this press.

ज्ञानी जैल सिंह : उपसभापति जी, मेहरबानी कर के आप उन को कहिये कि वे ऐसी गलती क्यों करते हैं । आप को समय मिल सकता है । यह बात आप को अच्छी नहीं लगती । (*Interruption*) मैं आप से नहीं, उन से कह रहा हूं । (*Interruption*) यह आप की मर्जी है । मैं तो उन का बहुत अदब करता हूं लेकिन कोई गलत बात कहें तो जवाब जरूर दूंगा । अंतुले जी के नाम पर उन्होंने कहा । आप को मालूम होगा कि अभी असेम्बली के स्टेट में जो इलेक्शन हुए हैं उस में अंतुले जी 62 हजार वोटों से अपने विरोधियों को हरा कर आये हैं, जीते हैं और उस में उन की पार्टी का भी कैंडीडेट था और उन का भी था और उन का भी था । तो उन सब कैंणीडेट्स को हरा कर वह आये हैं और उनको वहां की स्टेट असेम्बली ने यूनेनिमस हो कर चुना है । और ऐसे आदमी के प्रति वह ऐसी शिकायत करते है, यह अच्छी बात नहीं है ।

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: On a point of order, Sir.

श्री उपसभापति : आप ने अपनी बात तो कह दी । अब उन की बात भी सुनिये ।

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: I have great respect for my friend, Zail Singhji, but the Home Minister of the Government of India is so ill-informed that I pity him. My party did not contest; it was the Janata Party. I did not blame Mr. Antulay or anybody but he said that if Mr. Madhav Gadkari, Editor of Bombay Sarkar has exposed some matter, that can be taken care of under National Security Ordinance or MISA. I only referred to that statement. I did not blame Mr. Antulay. He is also a good friend of mine.

ज्ञानी जैल सिंह : उपसभापति जी, मैं कुलकर्णी जी का बड़ा मशकूर हूं । उन्होंने बता दिया कि उनका कोई कैंडिडेट नहीं था । असल बात यह है कि अपोजिशन पार्टीज को कोई कैंडिडेट मिला ही नहीं । इलेक्शन से पहले ही हार मान ली और कैंडिडेट था तो उसको खड़ा करके उसको सपोर्ट करते रहे । मैं कुलकर्णी जी से पूछता हूं कि आपने अन्तुले जी के खिलाफ जो उम्मीदवार खड़ा किया था उसको मदद देने का ऐलान किया था या नहीं ? (*Interruption*)

श्री कलराज मिश्र : इस प्रकार की भाषा बोलेंगे तो . .

(*Interruptions*)

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: Sir, I am on a point of order.

**Expunged as ordered by the Chair.

श्री उपसभापति : कोई प्वाइंट आफ आर्डर नहीं है, जवाब देने दीजिए । इस पर प्वाइंट आफ आर्डर नहीं उठता ।

(Interruption)

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: Again, he has taken my name now. An editorial has appeared in the 'Times of India' today. It has criticised Mr. Antulay by saying that 54,000 votes is no criterion for talking irrelevance. It has said that vote does not give the authority to talk irrelevance. This is what has appeared in 'The Times of India'. *(Interruptions)*

श्री उपसभापति : कोई प्वाइंट आफ आर्डर नहीं उठता है । माननीय मंत्री जी आप जो प्रश्न हैं उनका जवाब दे दें। *(Interruption)*

श्री हरी शंकर भाभड़ा : उपाध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है । जब रामेश्वर सिंह जी बोल रहे थे तो उन्होंने कुछ घटनाओं की ओर ध्यान दिलाया और आपने कहा कि ये मामले से सम्बन्धित नहीं हैं । इस पर आपने अलाऊ नहीं किया । लेकिन जब गृह मंत्री श्री अन्तुले के चुनाव की मतगणना बता रहे हैं और सारे चीफ मिनिस्टरों की जीत की डुम-डुम घोष कर रहे हैं तो क्या इससे सम्बन्धित यह बात है ? सीधा मेरा व्यवस्था का प्रश्न है कि यदि ये पोलिटिक्स यहां लायेंगे तो हमें भी कहने दें . . . *(Interruption)*

श्री उपसभापति : माननीय सदस्य श्री कुलकर्णी जी ने जो आरोप लगाये उसके सिलसिले में उन्होंने कहा । प्रेस के बारे में जो बात उन्होंने कही उसका जवाब उन्होंने दिया . . . . *(Interruptions)*

श्री हरि शंकर भाभड़ा : उपाध्यक्ष महोदय, मुझे इतनी रूलिंग दे दीजिए कि इस तरह की जितनी पोलिटिक्स आप अलाऊ करेंगे तो हमको भी अलाऊ करेंगे ? जिस ढंग से वह जवाब दे रहे हैं वह हमें भी अलाऊ करेंगे ? . . . *(Interruption)*

श्री उपसभापति : आपको तो हमेशा अलाऊ करते हैं । आप उनकी बात सुनिये . . . *(Interruption)*

श्री हरी शंकर भाभड़ा : हम उन के हर तर्क का उत्तर सटीक दे सकते हैं बशर्ते आप उनको जैसे अलाऊ करते हैं, हमें भी करिए । . . . *(Interruptions)*

ज्ञानी जैल सिंह : उपसभापति जी, मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरे बोलने के बीच में 6–7 प्वाइंट आफ आर्डर के लिए आपने इजाजत दी है । मैं आपसे यह आशा नहीं रखता . . . *(Interruption)*

श्री उपसभापति : प्वाइंट आफ आर्डर उठेगा तो जरूर मौका दिया जाएगा ।

श्री शिव चन्द्र झा : उपाध्यक्ष महोदय, प्वाइंट आफ आर्डर हमारा राइट है । *(Interruptions)*

श्री हरी शंकर भाभड़ा :

Sir, this is a reflection on the Chair, by the Home Minister. We cannot tolerate it. He is charging you.

आप इस हाउस की इज्जत को बचाइये । होम मिनिस्टर, गृह मंत्री आप पर रिफ्लेक्शन कास्ट कर रहे हैं . . .

(Interruption)

ज्ञानी जैलसिंह : मैं उपसभापति जी का बड़ा सत्कार करता हूं और सबसे ज्यादा सत्कार करता हूं । अब भी मेरे मन में सत्कार है और मैंने कोई ऐसा लफ्ज नहीं कहा । मैंने यह कहा है कि आप जैसे उपसभापति होते हुए इतना इनडिसिप्लिन नहीं होना चाहिये । . . . *(Interruption)*

डा० भाई महावीर : आपने सुना क्या कहा उन्होंने । *(Interruption)*

DR. M. M. S. SIDDHU (Uttar Pradesh): He has not come here to discipline the House. *(Interruptions)* He can discipline himself, he has not come here to discipline the House.

SHRI HARI SHANKAR BHABHRA: This is a charge on the Chair. This is a charge on you. *(Interruptions)*.

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI: This is a kind of promotion given to you also by the Home Minister.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I do not require any promotion.

ज्ञानी जैल सिंह : आज आप उपसभापति हैं तो सब मेम्बरों का और मिनिस्टरों का पूरा फर्ज है कि आपका सत्कार करें । मैं वह आदमी हूं कि आप जब उपसभापति नहीं थे तब भी आपका सत्कार करता था और आज भी मैं आपकी रेस्पेक्ट करता हूं । मेरे मन में कोई ऐसी बात नहीं है । मैं फिर दर्खास्त करूंगा कि आप इतने समझदार और महान उपसभापति होते हुए मेरी बात पूरी होने तक इनको कंट्रोल नहीं करते यह मैं कह रहा हूं । *(Interruption)*

श्री उपसभापति : आप अपनी बात कहिये । *(Interruption)*

श्री कलराज मिश्र : इन्होंने आप पर आरोप लगाया है इस पर आप व्यवस्था दीजए ।

SHRI BHUPESH GUPTA: On a point of order. When the Union Home Minister has been good enough and gracious enough to entertain us in such a manner, do you think we should interrupt him? I would request you to ask him to come to the centre of the hall and entertain us, all of us, as a common possession of the House.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He is very much in the centre of the hall.

श्री रामेश्वर सिंह : मेरा व्यवस्था का प्रश्न है ।

श्री उपसभापति : 20 मिनट हो गये हैं आपको बोलते हुये । अब क्या आपका व्यवस्था का प्रश्न है । *(Interruption)*

श्री रामेश्वर सिंह : मैं प्रार्थना करूंगा . . .

ज्ञानी जैल सिंह : मेरी बात पूरी होने के बाद इनकी व्यवस्था को सुन लीजिए।

श्री रामेश्वर सिंह : पहले मेरी व्यवस्था सुन लीजिए । *(Interruptions)*

श्री उपसभापति : क्या व्यवस्था है आपकी ।

ज्ञानी जैल सिंह : ठीक है तो पहले आप इनकी बात सुन लीजिए । जितनी देर तक आप कहेंगे मैं बैठा रहूंगा । बाद में मैं बोलूंगा । *(Interruption)*

श्री उपसभापति : क्या व्यवस्था है ।

श्री रामेश्वर सिंह : मेरा व्यवस्था का प्रश्न यह है कि जब मैंने आपसे कहा कि हमें आप इजाजत दीजिए बोलने के लिये तो आपने मेरा समय काट दिया ।

श्री उपसभापति : आप 20 मिनट तक बोलते रहे । मैंने आपका समय नहीं काटा।

श्री रामेश्वर सिंह : आपने हमें संविधानिक बातें भी नही बोलने दी । आपने हमें अपने पक्ष को भी नहीं रखने दिया। *(Interruption)*

श्री उपसभापति : आपने बड़े जोरदार ढंग से अपने पक्ष को रखा ।

श्री रामेश्वर सिंह : आपने हमारे साथ पक्षपात किया। *(Interruption)*

श्री उपसभापति : अच्छा किया अगर पक्षपात किया । आपका कोई प्वाइंट आफ आर्डर नहीं है ।

श्री रामेश्वर सिंह : जो मंत्री महोदय बात कह रहे हैं उनका इससे कोई मतलब नहीं है । अन्तुले साहब की बात इन्होंने कही इसका कोई मतलब नहीं है इस बात से। *(Interruption)*

श्री उपसभापति : मंत्री जी तो अभी कुछ बोले ही नहीं ।

श्री रामेश्वर सिंह : जहां तक चुनाव का सवाल है इन्होंने जबर्दस्ती पोलिंग बूथ पर अपना कब्जा कराया है। *(Interruption)*

श्री उपसभापति : कोई प्वाइंट आफ आर्डर नहीं उठता। (*Interruptions*)

श्री सीता राम केसरी : इन्होंने चेयर पर जो एसपर्शन किया है वह वापस लिये जायें।

श्री उपसभापति : चेयर पर कोई एसपर्शन होगा तो उसको मैं देख लूंगा।

ज्ञानी जैल सिंह : उपसभापति जी, मैं बड़े अदब से कहना चाहता हूं कि लोगों के प्रतिनिधि यहां आये हुए हैं। हम किसी के कार्यक्रम को सराह नहीं सकते तो निन्दा भी नहीं कर सकते। लेकिन पर्सनल इज्जत हमको एक दूसरे की बरकरार रखनी चाहिये। अगर हम पर्सनल इज्जत बरकरार नहीं रखते तो लोग हमारी इज्जत नहीं करेंगे। हमारे ऊपर तमाम लोग देखते है। मैंने यह बात कही थी, इसलिए यह इरिलेवेन्ट नहीं है, असंगत नहीं है। चूंकि उन्होंने जिक्र किया था इसलिए मैंने कहा। वह तो अपने आप को डिफेन्ड नहीं कर सकते और गृह मंत्री अगर किसी स्टेट के मुख्य मंत्री के प्रति कोई बात कही जाय और वे सभा में बैठे हुए हों और वह मुख्य मंत्री को डिफेन्ड न करें तो गृह मंत्री अपनी ड्यटी पूरा नहीं करता है। इसलिए मैंने अपना फर्ज पूरा किया है। इन दोस्तों से मेरा कोई झगड़ा नहीं है। मैं उनका अदब करता हूं, इज्जत करता हूं, सत्कार करता हूं। लेकिन मैं फिर यह कहूंगा कि आप हमारी सरकार के कारनामों के बारे में जितना कह सकते है कह लीजिए, बुरा कह लीजिए, भला कह लीजिए . . . (*Interruption*) मैं तो हंसता रहा हूं। श्री रामेश्वर सिंह जी गुस्सा हो गये और इल्जाम लगाने लग गये . . . (*Interruption*) आप शांति रखिए। आपने तीन अखबार दिखाए। उनमें से एक में मेरा फोटो भी दिखलाया। मेरा फोटो पास स्वामी के साथ है, यह मैं नहीं जानता। वह स्वामी हैं या नहीं हैं यह मैं नहीं जानता। लेकिन आप उनको स्वामी कहते हैं. . . (*Interruption*)

श्री रामेश्वर सिंह : पेपर मैंने दिखाया है . . . (*Interruption*)

श्री उपसभापति : आप अपनी बात कह चुके हैं। आप अब बैठ जाइये।

ज्ञानी जैल सिंह : उपसभापति महोदय, उनको मैंने कुछ कहा नहीं है। श्री रामेश्वर-सिंह जी, आप इतनी जल्दी क्यों करते हैं। जरा सब्र से बात कीजिए। आप बहुत अच्छा बोले, प्रभावशाली बोले, हालांकि उसमें कुछ नहीं था, कोई खास बात नहीं थी। लेकिन आप बोले हैं . . . (*Interruption*)

श्री उपसभापति : आप मंत्री महोदय को बोलने दीजिए।

ज्ञानी जैल सिंह : उनकी राय बहुत अच्छी थी। मुझे ऐसा लगा कि उन्होंने जो तीन पेपर दिखलाये, उन तीनों पेपरों से न तो मेरा कोई विरोध है और न ही उनसे मेरा कोई खास ताल्लुक है। लेकिन मेरा यह ख्याल है कि वह बिल्कुल इरिलेवेन्ट बात है। उन्होंने फोटो छापे हैं। मिनिस्टरों के फोटो छपते हैं। उनके पास कई लोग आ जाते है। हम सबको जानते भी नहीं है और वे फोटो उतार ले जाते हैं। फोटो छापने में बुराई की बात नहीं है। मुझे तो ऐसा लगता है कि आनरेबल मेम्बर की उन पेपरों के मालिकों के साथ बहुत हमदर्दी है। उन्होंने यहां पर उनका जिक्र करके सारे हिन्दुस्तान में उनका ऐसा एडवरटाइजमेंट कर दिया कि हजारों रुपए खर्च करके भी वे ऐसा नहीं कर सकते थे। इसमें उनका कोई नुकसान नहीं है। हमारा भी कोई नुकसान नहीं है लेकिन फायदा भी कोई नहीं है। उन पेपरों को कुछ फायदा हो गया है। इसमें हमारा कोई

[श्री ज्ञानी जैल सिंह]

कसूर नहीं है कि लोग हमारा फोटो उतार ले जाते हैं । फोटो के हिसाब से आप हमारे कामों को मत देखिए । हमारे कार्यों के हिसाब से हमको देखिए ।

दूसरी बात श्री कुलकर्णी जी ने कही है . . . (*Interruption*) श्री रामेश्वर सिंह जी, आप शांति से मेरी बात सुनिए, सच पूछिए तो मुझे अभी तक पुख्ता पता नहीं है कि आप लोक दल में हैं या नहीं हैं । पहले मुझे से इस बारे में एक बार गलती हुई । उपसभापति जी, मुझे माफ करें, मैं एक इरिलेवेन्ट बात कह रहा हूं। आपकी इजाजत हो तो मैं कह दूं । हमने सब पार्टियों के नेताओं की एक बैठक बुलानी थी तो मैंने लोक दल के नेता को भी बुलाया । चौधरी चरण सिंह जी मिले नहीं । तो मैंने सोचा कि जनरल सेक्रेटरी को बुला लूं । मैंने श्री नरेन्द्र सिंह जो लोक दल के जनरल सेक्रेटरी थे उनको टेलीफोन से बुलाया तो वे आ गये । मेरी उनसे बात हुई और लोक दल के नेता के रूप में मैं उनसे बात करता रहा । बात सुनने के बाद मुझे पता लगा कि उन्होंने लोक दल छोड़ दिया है । इसलिए मुझे मालूम नहीं है कि आप लोक दल में कब आये और कब नही आये । मैं पर्सनली आपकी इज्जत करता हूं ।

अब मैं श्री कुलकर्णी जी की बात पर आता हूं । उन्होंने मेरे से यह कहा कि . . .

श्री अरविन्द गणेश कुलकर्णी : प्रेस पार्टी का क्या हुआ ?

ज्ञानी जैल सिंह : उपसभापति जी, अगर कुलकर्णी जी चाहते है कि उनकी बात का कोई जवाब न दिया जाय तो मुझे भी इस पर कोई एतराज नहीं है । मैं उनके क्वेश्चन का जवाब नहीं देता हूं ताकि वह शांत रहें ।

श्री उपसभापति : श्री जगदीश प्रसाद माथुर ।

श्री रामेश्वर सिंह : श्रीमन्, आप पहले मेरी बात सुन लीजिए । मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है ।

श्री उपसभापति : कोई व्यवस्था का प्रश्न नहीं है ।

(*Interruption*)

श्री रामेश्वर सिंह : यह जो किताब मैंने दी है . . .

श्री उपसभापति : यह कोई व्यवस्था का प्रश्न नहीं है ।

श्री रामेश्वर सिंह : श्रीमन, मेरा कहना यह है कि . . . (*Interruption*)

श्री उपसभापति : श्री रामेश्वर सिंह का भाषण नहीं लिखा जाएगा ।

श्री रामेश्वर सिंह : (*Continued to speak*).

श्री उपसभापति : श्री रामेश्वर सिंह जी, आप बैठ जाइए । स्वामी जी को चाहिए कि आपका भी फोटो छाप दें ।

श्री रामेश्वर सिंह : (*Continued to speak*).

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : श्रीमन्, काफी गरमा गरमी हो गई है । मैं समझता था कि गृह मंत्री सरदार जी बोलेंगे तो ऐसी बात कहेंगे . . .

श्री उपसभापति : आप अपना प्रश्न पूछिए ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : वहीं से तो पकडूंगा ।

कोई ऐसी बात कहेंगे जो कि एक सीनियर मिनिस्टर के इन्टरवेंशन के लिए आवश्यक होगी । उन्होंने अपने इन्टरवेंशन

में कोई ऐसी बात नहीं कही । इन छोटी-छोटी बातों का उल्लेख मकवाणा साहब भी कर सकते थे । मुझे खेद है कि सरदार जी भी, उन्हीं के कहने के अनुसार, आज आंखें खोल कर सुन रहे थे । पिछली बार उन्होंने कहा था कि आंखें खोलकर सुना करो ।

(*Interruption*)

ज्ञानी जैल सिंह : आंखें खोल कर देखा जाता है, सुना नहीं जाता ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : आपके वाक्य को ही दोहराया है । आपने एक बार कहा था कि आंखें खोल कर सुनिए । इसी लिए मैंने निवेदन किया कि आज आप आंखें खोल कर सुन रहे थे ।

श्रीमन्, यदि कोई दल या कोई सरकार यह दावा करे कि देश में किसी प्रकार की गड़बड़ी कहीं नहीं होगी तो मैं समझता हूं कि यह दावा अनुचित होगा । आज देश में लॉ एंड आर्डर की स्थिति बिगड़ रही है । यह चिन्ता की बात जरूर है । लेकिन मैं यह मान कर नहीं चलता कि कहीं पर कभी कोई गड़बड़ नहीं होगी । लेकिन चिन्ता का जो विषय है श्रीमन्, वह यह है कि जिन बातों के उदाहरण रामेश्वर सिंह जी ने, श्री कुलकर्णी जी ने और झा साहब ने दिए है उनसे और समाचार-पत्रों में जो प्रकाशित हुआ है, उससे दो-तीन बातें स्पष्ट होती हैं । आज से पहले भी दंगे होते थे, झगड़े होते थे, चोरी होती थी, डकैती पड़ती थी, कत्ल होते थे, लेकिन उनकी रूपरेखा कुछ अलग थी और आज की रूपरेखा अलग है, चिन्ता का विषय यह है । कारण क्या है ? इसमें दो-तीन बातें मुख्य हैं । मुझे चिन्ता इस बात की है कि जो दल सत्ता में बैठे हैं उनके प्रधान मंत्री से लेकर नीचे तक के आदमी जब इन बातों के लिए प्रोत्साहन दें और उससे झगड़े खड़े हों । असली चिन्ता यहां है । आसाम के विषय में मकवाणा जी ने कई बातें कही हैं । मानता हूं कि वहां पर लॉ एंड आर्डर की सिचुएशन बिगड़ी हुई है । आप जरा अपने गिरेबान में मुंह डालकर देखें कि वहां स्थिति क्यों बिगड़ी ? कई महीनों पहले, जब आन्दोलन प्रारम्भ हुआ था, यहां से कांग्रेस (आई) के नेतृत्व ने, स्वयं प्रधान मंत्री जी ने भी कुछ छिपे शब्दों में बंगाल और आसाम के बीच की रेल गाड़ियों को, बसों को अर्थात् सारे ट्रेफिक, को बन्द करने की योजना को प्रोत्साहन दिया था । आज उनकी पुलिस वहां पर है, फौज है, । फौज भी कामयाब नहीं हो रही है क्योंकि उसमें भी कई गड़बड़ियां है ? चिंता का विषय यह है कि सरकार और सरकारी मशीनरी, सरकारी नेता इन चीजों को रोकने के बजाय छुपे या खुले रूप से सहायता करने लगे हैं । आज यह स्थिति आ गई है । दुर्भाग्य है । अगर मैं नाम लेना शुरू करूं तो बहुत गलत होगा 1967 के बाद और खासतौर से 1975-76 के बाद कुछ ऐसे एलीमेन्ट हमारी राजनीति में आ गया है, और जिसका श्रेय--मुझे यह कहना पड़ेगा नहीं तो मैं भी शामिल हो जाऊंगा--आज के सत्ताधारी दल को है--जो सामान्यतः ऐसा नहीं है जैसा देश के एक आदर्श नागरिक को होना चाहिए । और यह लोग पुलिस के मामले में इन्टरफियर करते है । आप किसी पुलिस अधिकारी से पूछें । मैं सरदार जी और मकवाणा साहब से कहूंगा कि उनके जो चैहते, भिंडर साहब हैं उनको भी यदि वे बुला लें तो वे भी कहेंगे कि पुलिस बहुत-सी बातें केवल इस लिए नहीं कर पाती कि उस में लगातार पोलिटिकल इन्टरफियरेन्स होता रहता है । पोलिटिकल इंटरफियरेंस के कई तरीके हैं । एक तरीका तो यह है कि खास तौर से सत्तारूढ दल के लोगों द्वारा पोलिटिकल इंटरफियरेंस किया जाता है । वे लोग जाकर अधिकारियों को कहते हैं कि इस को छोड़ दो, फलां को छोड़ दो । विरोधी दल के नेता को कोई पूछता ही नहीं है । अभी दूसरे सदन के एक सदस्य के बात हमारे एक साथी ने कही । मैं नाम नहीं लेना चाहता । उन्होंने एक कांड किया;

[श्री जगदीश प्रसाद माथुर]

लड़की मर गई । उनके खिलाफ कोई कार्यवाही क्यों नहीं हुई । दूसरा उदाहरण मैं देना चाहता हूं दिल्ली में गौतम जयसिघानी का कत्ल हुआ । आज कितने महीने हो गए । श्रीमन्, उसकी अब भी पूछताछ पूरी नहीं हुई । अगर मैं उसके पीछे छिपी हकीकत कहूंगा तो आप नाराज हो जाएंगे । अभी शोरगुल मच जाएगा । कांग्रेस (आई) के एक नेता जो अब इस दुनिया में नहीं रहे, उनके कुछ लोगों का संबंध उस मामले से था । उनके परिवार के लोगों का संबंध था । इसलिए पुलिस आज भी इस मामले का पता नहीं लगा सकी । इसी तरह, निरंकारी बाबा की हत्या का मामला है । कई महीने हो गए, कहीं भी कुछ नहीं किया जा सका । एक तो सीधा इंटरफियरेंस होता है और दूसरा इंटरफियरेंस प्रोमोशन और रिक्रूटमेंट का है । मैं आपके ही द्वारा सदन में दिए गए जवाब को उद्धृत करता हूं । दिल्ली पुलिस की भर्ती की गई । पिछले दिनों में कुल 760 आदमियों की भर्ती हुई जिसमें से 242 केवल उस गुरदासपुर जिले के है जहां से पुलिस कमिश्नर भिण्डर साहब की पत्नी एम० पी० है । ऐसा क्यों ? और दिल्ली से कितने भर्ती किए गए हैं । कुल 55 । यदि इस प्रकार का पक्षपात होगा तो चाहे सरदार जी हों, चाहे मकवाणा साहब हों या स्वयं भगवान को भी ला कर बैठा दीजिए फिर भी पुलिस ठीक काम नहीं करेंगी । भिण्डर साहब को आप लाए (*Time bell rings*) देखिए बहुतों ने समय लिया है मैं कोई बेतुकी बात नहीं कर रहा हूं । मैं उदाहरण भी नहीं दे रहा है । केवल मेरे ऊपर कानून चला, यह तो अच्छा नहीं है । पांच मिनट और लूगा ।

श्री उपसभापति : पांच मिनट बहुत ज्यादा हो जाएगा ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : अच्छा 10 मिनट दे दीजिए ।

श्री उपसभापति : दो मिनट ले लीजिए ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : दो से शुरू कर के पांच तक जाऊगा । आप सैकड़ों लोगों को पीछे डाल कर भिण्डर साहब को लायेंगे और उनकी पत्नी को लोक सभा का मैम्बर बना दिया जायेगा, तो पुलिस का अनुशासन नहीं रह सकता । फिर कौन उनको पकड़ेगा ? इसी तरह एक और तरीका है पोलिटिकल इंटरफियरेंस का । सत्ता में बैठे राजनीतिक दल के लोग खुल्लमखुला ऐसी बातें करते हैं जो नहीं करनी चाहिए । इसके उदाहरण हैं । समाचार-पत्रों पर आक्रमण से ले कर बलात्कार तक सब काम हुए है । यदि इन घटनाओं के पीछे राजनीतिक कार्यकर्ताओं की हिम्मत-अफजाई न हो तो यह सब कैसे हो सकता है । लेकिन दुःख यह है कि प्रधान-मंत्री से ले कर नीचे तक छोटे बड़े नेता और मंत्री किसी ने कभी न तो उनको कंडम किया बल्कि उनको प्रोटेक्ट किया और उनके साथ समझौता किया । यदि यह स्थिति रही तो पोलिटिकल इंटरफियरेंस जिस प्रकार चलता है, चलता रहेगा । उडीसा उदाहरण, बंगलौर का उदाहरण, हैदराबाद का उदाहरण, एनाडु नाम के समाचार पत्र को घेरा । जब घेरा तो समाचार पत्रों में छपा । आंध्र के मंत्री ने पुलिस के आई० जी० से कहलवा दिया कि प्रोटेक्शन नहीं दी जाएगी । This is what the Labour Minister said यह पोलिटिकल इंटरफियरेंस स्थिति की एक नयी दिशा है । दूसरी नयी दिशा है पोलिटिकल हत्यायें । पहले राजनीतिक हत्यायें नहीं होती थीं । आज राजनीतिक हत्यायें हो रही हैं । कम से कम पिछले छः महीनों में जब से इंदिरा जी की सरकार दोबारा आई 7 60–70 पोलिटिकल हत्यायें हुई है । एटा का ताजा उदाहरण सामने हैं । एक भूतपूर्व एम० एल० ए० श्री सतीश शर्मा की हत्या कर दी गई । मारे जाने वालों में प्राय : कोई भी सत्तारूढ़ दल का व्यक्ति नहीं है । सारे उदाहरण मैं नहीं देना चाहता । मरने वाले सारे के सारे विरोधी दलों के नेता हैं । यह आज

का नया ट्रेड है। एक नयी बात और सामने आई है that is the professional apathy. पुलिस के लोगों में आज उत्साह नहीं है। क्यों नहीं है? एक तो यह पोलिटिकल इंटरफियरेंस है दूसरा यह कि जितनी चीजें उनको दी जानी चाहिए वे नहीं दी जातीं।

श्री सीताराम केसरी : भूख नहीं लगी है ?

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : आप वादा करते हैं मुझे लंच खिलाना तो मैं अभी बंद करता हूं, खिलायेंगे ? ज्यादा नहीं खाता हूं 15–20 रुपए का ही खाऊंगा, अंतिम बात कहता हूं .....

श्री उपसभापति : अब समाप्त करिए।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : पुलिस में सुधार की आवश्यकता है। आवश्यकता का अर्थ यह नहीं है कि केवल उनको खींचा जाय। रिक्रूटमेंट की प्रक्रिया को कुछ थोड़ा-सा बदलिए। इस आधार पर लोगों को मत रखिए कि किसके पीछे किसका हाथ है। ईमानदारी से उनके चरित्र को, उनकी ट्रेनिंग को देखिए तथा पुलिस फोर्स को माडरनाइज करिए। नारों के आधार पर योजना न करें और एक बात कहना चाहता हूं। जो दंगे हुए हैं, वे हिन्दू मुस्लिम रायट्स नहीं थे, न हैं। सच्ची बात यही है। मैं मुरादाबाद गया था, अलीगढ़ नहीं गया था। सबका कहना यह है कि मुरादाबाद में हिन्दू मुस्लिम रायट नहीं हुआ। प्रारम्भ में कुछ लोगों द्वारा पुलिस का विरोध किया गया और उस पर हमला हुआ लेकिन पुलिस और उसके बाद दरपर्दा उत्तर प्रदेश की सरकार ने और दरपर्दा केन्द्र की सरकार ने इसको हिन्दू मुस्लिम के झगड़े का रुख दिया ? अत : दंगा इसलिए नही होता कि दो सम्प्रदायों के बीच में झगड़ा हुआ हो लेकिन इस बात से होता है कि उसको साम्प्रदायिक रूप देने के लिए सरकार और सरकार के अधिकारी स्वयं असलियत को परिवर्तित करते हैं। श्रीमन्, मैं यह कभी दावा नहीं करता हूं कि कोई भी सरकार ऐसी स्थिति लायेगी कि जहां कोई लॉ एण्ड आर्डर सिचुएशन नहीं होगी। लेकिन कुछ दिशायें पैदा हुई है जिन दिशाओं का आधार आप हैं गृह मंत्री जी कान खोल कर सुनिए, कारण आप हैं आपका दल है, सरकार है। उन दिशाओं को रोकिए। इन दिशाओं को रोक देंगे तो मैं यकीन के साथ कह सकता हूं कि 50 प्रतिशत आपका काम हो जायेगा।

श्री उपसभापति : अब आप कृपया समाप्त करिए। आपने सब कह दिया है, गृह मंत्री जी।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : दूसरे शिकायतों के बारे में पुलिस का रिकार्ड ही ऐसा है *(Interruption)* शिकायतें रिकार्ड करते ही नहीं है. . . . *(Interruption)* मुझे लंच के लिए चलना है।

श्री योगेन्द्र मकवाणा : माननीय उपसभापति जी, काफी बातें माथुर साहब ने कहीं हैं और खास कर उन्होंने उस बात पर जोर दिया कि पुलिस में ज्यादा इन्टरफियरेंस हो रहा है। यह बात सही नहीं है। पहले था, बहुत था लेकिन अब इन्टरफेयरेंस नहीं है। मैं माथुर साहब से कहना चाहता हूं कि हमारी सरकार में कोई पुलिस में इन्टरफेयर नहीं कर रहा है। कुछ ऐसी बातें हों कि वे सब्स्टेन्शियेट कर सकें तो ठीक बात है।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : आप पुलिस का रिकार्ड देख लीजिए। वहां पर कौन-कौन से लोकल नेता जाकर छुड़वाते हैं, आपको मालूम हो जायगा। मैं नहीं कहता कि सरदार जी या आप छुड़वा देंगे, बड़े-बड़े मरडर और स्मगलर आयेंगे उनको आप छुड़वा देंगे। छोटे-मोटे को नहीं छुड़वायेंगे।

श्री योगेन्द्र मकवाना : ऐसे छोटे-मोटे जाते होंगे तो इसका असर पुलिस पर नहीं है।

श्री रामेश्वर सिंह : श्रीमन् ...

श्री उपसभापति : अब कहने दीजिए ।

श्री योगेन्द्र मकवाणा : एक बात उन्होंने पोलिटिकल मर्डर की कही है । वह हम भी कहते है । लेकिन कैसे होता है । यह सदन की बात है इसमें सब पोलिटिकल पार्टीज को सोचना पड़ेगा . . *(Interruptions)*

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : क्या कांग्रेस 'आई' का कोई मर्डर करता है ?

श्री योगेन्द्र मकवाणा : कांग्रेस 'आई' के बहुत मर्डर हैं, आपको मालूम नहीं है, मेरे पास आंकड़े है, हमारे पास आ जाइये मैं बताऊंगा । पुलिस के माडरनाईजेशन की बात का जहां तक ताल्लुक है वह हमारे ध्यान में है, बहुत से माडरनाईजेशन के स्टेप हमने लिए है ...

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : गुरदासपुर डिस्ट्रिक्ट के फिगर्स दिए है ? उनको आप देखेंगे कि कितनी गड़बड़ी हुई है ।

श्री योगेन्द्र मकवाणा : गुरदासपुर में जो रिक्रूटमेंट हुआ, वह इसलिए हुआ कि कई लोग शिड्यूल कास्ट्स के चाहिएं थे वे नहीं मिले तो वहां ... *(Interruptions)*

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब सबके सेंटर हैं । श्रीमन् आप कहें तो पढ़ दूं । कम से कम 50 सेंटर्स हैं ।

श्री उपसभापति : आपको मालूम है . . . *(Interruptions)* जो आपने कह दिया और उनकी बात, दोनों की बात सामने आ गयी है ।

SHRI N. K. P. SALVE (Maharashtra): Mr. Deputy Chairman, Sir, the subject-matter of the Calling Attention—the deteriorating law and order situation in the country—is an extremely serious matter, and not for a moment could I spell out, from what was said by the Minister of State for Home Affairs or by the Home Minister, that they were complacent about the law and order situation. Not could it be spelt out, in all fairness, as though both of them or their Ministry are playing violin when Rome is burning, an allegation made by my esteemed friend, Mr. Kulkarni. In fact, it is a situation which warrants continuous vigilance. Various historical factors are there into which I do not want to go at this stage. But, Sir, there is an alarming deterioration in the law and order situation in a particular part of the country and in which organised violence, political violence, is being unleashed on a political party which is very deleterious, very pernicious to the working of democracy in the country, and conditions exist in terms of which the provisions of the Constitution are not being followed in that particular State. It is a fit case for action being taken under article 356. I refer to West Bengal. Sir, it is a matter of very deep regret, so far as I am concerned, that on this serious matter the hon. Member who initiated the debate should have made a speech which, I regret to say, was an exercise in sheer pornography. Such things could not have been said before his daugther or daughter-in-law. When I refer to Bengal and say it is a serious matter, when I submit that it is a serious matter when I submit that it is a atter in which there is organised violence unleashed and the constitutional machinery is not being used in accordance with the provisions of the Constitution but according to the whim, caprice and private humour of the political party in power to serve and subserve the party's own end. I can give you concrete instances as to how the constitutional machinery as such has completely collapsed. Party officials have started acting like police officials, magistrates and Government officials and are causing havoc. And my question to the Home Minister is, whether or not, times without number, the orders of the High Court of Calcutta are being flouted right, left and centre, under the name of what is known as Operation Share-croppers'

Rights. The small cultivators in whose favour decrees are issued by the Calcutta High Court are being ousted by the CPM workers. The small cultivators are not protected by the police because the people who oust them are CPM workers. As a result of that, there have been 36 murders to which the police are helpless spectators. The police are instructed systematically to misbehave with the opposition people, to harass them and to persecute them. I want to know from the Minister of State for Home Affairs whether or not on the 24th November, four Congress leaders were mercilessly beaten at Chinchura, district Hooghly.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Congress (I) or Congress (U)? Make it clear.

SHRI N. K. P. SALVE: I am referring to Congress(I) members. The four victims who were mercilessly beaten are Ajit Panja . . .

SHRI BHUPESH GUPTA: Capital "I" or small "i"?

SHRI N. K. P. SALVE: Bhupeshda, I am capable of taking care of you and everybody, but I request you as a senior Member at least to listen to this matter seriously.

SHRI BHUPESH GUPTA: I am listening.

SHRI N. K. P. SALVE: How capital is the "I" you have known in 1980 and in many other elections also you will know.

SHRI BHUPESH GUPTA: There are two Congresses; they are fighting each other, killing each other. One is small "i" and the other is capital "I".

SHRI N. K. P. SALVE: Our fight is because we work on democratic lines. In the CPI there is a much bigger fight between you and Dange. So forget about it. These things do go on. It shows virility. The four people—please listen, Mr. Bhupesh Gupta—who were beaten mercilessly are Ajit Panja, President of the PCC, Gopal Das Nag, Abdul Sattar and Bhavani Singh Roy, three out of whom are ex-Ministers of Bengal and outstanding and distinguished leaders in public life. One of them Ajit Panja, is lying with a broken leg. I would like to know from the Minister whether or not it is a fact that Shri Subrata Mukherjee was mercilessly beaten in September in Calcutta itself. He was hit ruthlessly on the neck, a place where usually even the police people do not hit. He is an ex-Minister of Bengal. And when the Chief Minister was asked to make a statement, what did he say? He said the police unfortunately could not recognise him and that is why they beat him. There is indiscipline sought to be systematically inducted into the police. I want to know whether or not pro-CPM police officials the other day took out a procession in uniform with police band at Cinsura and whether or not they shouted slogans describing the Prime Minister as fascist, etc, etc. If this be correct, can there be a more flagrant violation of the State official machinery being abused, grossly abused, in violation of the requirements of Constitutional propriety? Ours is a quasi-federal constitution. I do not want to go into it. If this is how officials are being used, that shows the attitude of the Government and the party in power. Police is being systematically incited to indiscipline and is being encouraged to build up... (*Time bell rings*) Please give me two minutes, Mr. Deputy Chairman. I have a few specific questions to ask. I want to know whether or not it is true in the process of politicalising the police force—that is my all allegation against the Government of West Bengal—there was one Deputy Commissioner in Calcutta, one Mr. Talukdar who openly criticised his senior, the Commissioner, one Mr. Sinha, as a clown, and when he did so—what happened?—when a complaint was made, Mr. Talukdar was promoted and Mr. Sinha was removed from the place. This is how things are going on. That is primarily because Mr. Talukdar has been a pro-CPM man right from his college days.

I want to know from the Minister whether or not Promode Das Gupta, Secretary, CPM, Chairman, Left Front Committee which is almost a super Cabinet . . .

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : आप उनको कैसे इतना समय दे रहे है ? हमको तो आपने रोक दिया ।

श्री उपसभापति : घंटी बजा दी है । 2 मिनट और समय दे दिया है ।

SHRI N. K. P. SALVE: हमने तो आपको इंटरप्ट नहीं किया I want to know whether or not Mr. Promode Das Gupta the other day described the Prime Minister as an anti-social and whether or not it is a fact that in a public place he asked: "who is Giani Zail Singh. What *locus standi* has he for being in Bengal? If necessary, we will have both the Prime Minister and Giani Zail Singh arrested in Bengal." I want to know whether or not this sort of hostile attitude, irresponsible attitude, is being shown. (*Time bell rings*) One more minute. The Finance Minister, Shri Ashoke Mitra, who was removed from the Central Government employment—he was an Economic Adviser here—said on the floor of the House—this is very serious—that unless and until the Centre is destroyed the States can never flourish and be prosperous, that they can never prosper and that he vowed that "it is my duty to destroy the Centre". I want to know whether or not, ultimately, attempts were made—he said this on the floor of the House—to tamper with the record of the Assembly on this account and when one official of the Assembly tried to resist this attempt to tamper with the record of the Assembly, he was suspended ostensibly for some other reason.

In the end, there is going to be the Government-sponsored *bundh* to morrow and there are going to be all sorts of problems arising out of this lawlessness and violence. The Government is going to ensure that it is a complete success. People have known instances when the entire police machinery, the entire power, the firing power, is being geared up to unleash itself against the Opposition. What havoc it can cause, what dangers it can pose, you can imagine. This is a fit case and I want to know from the Minister whether they are aware of the extremely disquieting situation in Bengal and whether they are working on the lines to clamp Article 356 without any further deterioration in the situation.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Most of the incidents which the hon. Member has narrated here are within our knowledge. I have received information that four Congress(I) workers were beaten, including the President, Mr. Panja. I know the case of Mr. Subroto Mukherjee. I know it personally. He met me and told me and narrated how he was mercilessly beaten by the police. But these are all matters pertaining to the States and we cannot take any action....

SHRI N. K. P. SALVE: Even when it is failure of the Constitutional machinery? Our people have no protection there.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: The hon. Member is rightly agitated because of the situation created by the Front Government in West Bengal. But as I said, these are all matters pertaining to law and order which is a State subject. We can at the same time enquire from the State Government. But we cannot give any direction on these matters. However, law and order situation has not gone to the extent of warranting any action under article 356 of the Constitution.

SHRI P. RAMAMURTI (Tamil Nadu): These allegations have been made against the West Bengal Government. The Prime Minister goes about saying these things. But when Mr. Jyoti Basu was asked to give instances, letters have been exchanged and every instance has been explained. Those letters are there. Mr. Jyoti Basu pointed out that the number of CPM workers arrested is much more than the Congress (I) members. This is a fact. I do not say that some of

our supporters do not retaliate when they are attacked by your party people. But it is on both sides. There is no doubt about that and we request the Prime Minister to see that her own people do not fight each other. This is creating problem and about 20 Congressmen have been killed by each other. Please stop this. With regard to the statement made by the Home Minister, I am afraid they are living in an extremely complacent situation. He gave some statistics. Here are statistics which I have got from the Library. As far as we are concerned, we are accustomed to repression, attack and murders by the Police. Between 1971 and 1974 1,300 of our workers have been murdered. We are not concerned about these because we are accustomed to it. Now not only attacks on workers, trade union and kisan workers and workers of political parties are taking place. The situation today is far more worse because a common citizen's life in this country is not safe. We hear of rape cases every day. In running trains passengers are looted. Running buses are stopped and people are looted. These are common occurrences that are taking place in many parts of the country. The Home Minister was talking of statistics. These are the statistics I have got with me. 1977 से 1979 तक हुए साम्प्रदायिक झगड़ों तथा उनमें मारे गए व्यक्तियों की संख्या This is from the Library. In 1977—180; in 1978—230; in 1979—304. The number is going up. This is with regard to communal riots. Now with regard to rapes, 40 rapes have been reported, out of which 10 rapes have been committed by the Police personnel inside the police stations. This is not an ordinary thing. Such things did not take place before. Dacoities are taking place. And police personnel are hand in glove with the dacoits. The other day in Bihar a dacoit was caught and in his pocket was found a letter written by a Minister of the Bihar Government thanking him profusely for having helped the Congress(I) to come to power. This is the link-up between the Congress (I) politicians and the dacoits. This is the position now. When this is the position, Sir, how can the coal not be looted in Bihar? Coal does not reach the place it is intended for. So, this is the common occurrence. It is a common occurrence in Delhi where the girls are afraid of going out at night. When this is the position, the point to be noted is that the custodians of law and order have now become the biggest mafia gfoup in this country. This is the crux of the problem. I am not the only person saying this. One of your Members who was previously a Judge of the Allahabad High Court had said. He had himself said that in this country the police people are the biggest mafia group.

2 P.M.

Sir, I am reminded of a cartoon which I saw in an American magazine and I will describe the cartoon to you. The cartoon is like this: One man goes out with a gun in his hands and knocks at the doors of another man's house at mid night. The man inside the house comes out with a gun in his hand and asks the man: "Who are you?". The man outside says: "I am a policeman in the pay of the gangsters. Who are you?" The man inside the house says: "I am a gangster in the pay of the police." So, this is how it is and this is the position. One says, "I am a policeman in the pay of the gangsters" and the other man says, "I am a gangster in the pay of the police.".

SHRI BHUPESH GUPTA: If it were here, he would have said: "I am a Minister."

SHRI P. RAMAMURTI: So, this is the state of affairs in this country now. The entire administration today, as far as the custodians of law and order are concerned, is hand-in-glove with the dacoits and the entire police administration is hand in glove with the thieves, and they themselves perpetrate many crimes and they commit rape on women and all these things

[Shri P. Ramamurti]

are there and yet my friend says that it has improved. When you say improvement is taking place, more rape by the policemen takes place. This is how it happens and this is what he say. Today, you are in the position of the last days of the Mughal empire. During the last days of the Mughal empire, there was no law and order; each man unto himself. That is the position into which you are descending. I am warning you: This is the position to which you are coming. Therefore, all that I am saying is this: These are the facts of life. Let not the Minister try to bamboozle us or befool us. But he is only befooling himself by saying that things are improving. What are they going to do now? After all, the police is recruited by you only. In the case of the Bhagpat incident, what is the action you have taken? Even the report you don't publish. How many policemen have been arrested in this rape case? You tell me. How many policemen have been arrested in this rape case and how many policemen have been arrested for their involvement in the dacoities? Nothing is there. Therefore, Sir, this is a very serious situation which this country is facing today. I am not talking of political attacks because we are accustomed to them. I am not talking of the attacks on the trade unionists because we are accustomed to them, and we will bear them. What I am saying is that the country has come to a position where the common citizen's life and women's honour are not safe and these things today are completely at stake. Therefore, what are the steps that the Home Minister is going to take in order to tackle this very grave situation in the country? This is all that I would like to ask. As far as the police force is concerned, as far as the administration is concerned, how many people from the police force have been arrested? This is all that I want to know.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, Mr. Minister.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Sir, in the beginning, I have stated that we are not satisfied with the improvement. I said that there is a slight improvement. But improvement is there and it can be seen from the figures only which I have already quoted. I do not want to requote them. But I can say simply that there is an improvement and we are not satisfied with the improvement. I have repeatedly said that we are not satisfied and we are aware of it and we are taking action in that connection.

SHRI P. RAMAMURTI: That is all? This is the answer?

SHRI YOGENDRA MAKWANA: Sir, he has quoted some statistics I have nothing to say on that.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes. Mr. Bhola Prasad.

श्री भोला प्रसाद (बिहार) : उपाध्यक्ष महोदय, क्या माननीय मंत्री जी बतायेंगे कि अभी इसी महीने में, नवम्बर में पिछले हफ्ते बिहार के मधुबनी जिले में 117 गांवों में पुलिस की चौकी बिठायी गई है शान्ति व्यवस्था के नाम पर। आखिर एक जिले के एक इलाके में 117 गांवों में यह पुलिस चौकी किस लिए बिठायी गई है और वह पुलिस चौकी के अफसर लोग क्या कर रहें हैं ।

अभी अखबार में ब्यान आया है कि वहां के विधायक राजकुमार पुर्वे जो बिहार विधान सभा में कम्युनिस्ट बिधायक दल के नेता हैं उन्होंने कहा है कि वहां पुलिस चौकियां बिठायी गई है जो वहां के भू-स्वामियों की मदद कर रही हैं । जो बटाईदार हैं, जिनको बटाईदारी के पर्चे सरकार ने दिए हैं, खुद पिछली कांग्रेस हुकूमत में भी बटाईदारों ने लड़कर अपना सबूत प्रमाणित करके बटाई जमीन पर पर्चा हासिल किया उनको बटाईदारी के खिलाफ ये पुलिस वाले और उनके अफसर धान की फसल काटने से उनको रोकते हैं और बड़े जमींदार जो हैं, उनकी मदद करते हैं । वहां के खेत मजदूरों को बेदखल करने के लिए उनके ऊपर हमले हो रहे हैं।

इन दिनों मजदूरों के उपर कातिलाना हमले हो रहे हैं, उनको घरों से उजाड़ा जा रहा है और खतों से बेदखल किया जा रहा है।

इसी तरह बोध गया का महन्त जो हजारों एकड़ बेनामी जमीन धार्मिक न्यास के नाम पर नाजायज तरीके से कब्जा किये हुये है उसमें खेत मजदूरों की जमीन पर भी उसने कब्जा कर रखा है जिसको लेकर खेत मजदूर पिछले वर्ष भी और खुद जयप्रकाश बाबू का जो संगठन है नौजवानों का, उनकी ओर से भी और खेत मजदूर यूनियन की ओर से भी खेत मजदूरों के हितों की हिफाजत के लिए महन्त के नाजायज कब्जे के खिलाफ आन्दोलन चला रहे हैं। अभी वहां पर पुलिस चौकियां बैठाई गई हैं और वह पुलिस चौकी वहां खेत मजदूरों की मदद नहीं करती वह बोध गया के महन्त की मदद करती है। गांवों के गरीबों को फसल से बेदखल करने के लिए जमींदारों की मदद करती है। एक दिन एक गांव में जब खेत मजदूर फसल काट रहे थे तो बोध गया का महन्त और उसके लठैत हथियारबन्द तरीके से वहां पर पहुंचे। उन्होंने खेत मजदूरों को फसल काटने से रोक दिया और उसके साथ-साथ पुलिस भी आई। एक पत्रकार जब गया और उसने पूछा पुलिस वालों से कि आप यहां पर मौजूद हैं, इन खेत मजदूरों ने जो जमीन बोई है उसको काटने में मदद करने के लिए आप आये हैं या जो जमींदार या उसके लठैत हैं उनको बेदखल करने में मदद करने के लिए ? उसने कहा कि हम सिर्फ आये हुये है यह देखने के लिए कि अगर यहां पर किसी तरह की हिंसा हो तो हम उसको नहीं होने देंगे और उनसे जब पूछा गया कि आप किसके हुक्म से आये और प्रेस कारेस्पोंडेंट जब फोटो लेने लगा तो पुलिस मैन जो वहां पर तैनात था वह औंधा लेट गया धान की फसल के ऊपर जिससे उसकी सही पिक्चर न आ सके। इसलिए कि बोध गया के महन्त की वह मदद कर रहा था। और पुलिस चौकी जो बैठाई गई वह महन्त के लिए थी।

इसी तरह से संथाल परगना और छोटा नागपुर में, पिछले महीने वहां भी घटनायें हुई हैं। उनकी हत्यायें हुई हैं और धान की फसल काटने के वक्त मैं वहां पर बड़े पैमाने पर शान्ति और व्यवस्था के नाम पर जो पुलिस चौकिया बैठाई गई हैं वहां पर वे महाजनों की मदद करती है और आदिवासियों को बेदखल करती हैं। जिसकी वजह से आज वहां का पुलिस प्रशासन जो है उसका इस्तेमाल खुद गरीबों के खिलाफ, खेत मजदूरों के खिलाफ, आदिवासियों के खिलाफ, उनके हित की रक्षा करने के बजाय उनको लूटने के लिए, उनको हक से वंचित करने के लिए किया जा रहा है। जैसा मैंने कहा कि मधुबनी इलाके में, 117 पुलिस चौकियां बना रखी हैं। यह शांति व्यवस्था कायम हो रही है। शांति व्यवस्था के नाम पर गरीबों को लूटा जा रहा है। उन पर हमला हो रहा है।

श्री उपसभापति : आप समाप्त करिए।

श्री भोला प्रसाद : अभी समाप्त कर रहा हूं – अभी पश्चिमी बंगाल का उदाहरण दिया गया। पश्चिमी बंगाल की पुलिस और बिहार की पुलिस में फर्क है। पश्चिमी बंगाल की सरकार ने पुलिस को यह आदेश दिया है कि धान की फसल कटने के वक्त अगर बटाईदार फसल काटते हैं तो पुलिस वाले इन्टरफीयर नहीं करेंगे जमींदारों की ओर से मिलकर। बल्कि जहां तक संभव होगा बटाईदारों की मदद करेंगे। जब कि बिहार में इसका उल्टा हो रहा है। और राज्यों की बात तो छोड़ दीजिए यहां दिल्ली में क्या हो रहा है यह आपने अखबारों में देखा है।

[श्री भोला प्रसाद]

कल, परसों, यहां पर छात्र नौजवान हजारों की तादाद में सत्याग्रह करने आये । आजकल भी आ रहे हैं । उनका नारा है, उनकी मांग है कि हमें काम दो, काम नहीं देते तो बेकारी भत्ता दो और बेकारी भत्ता नहीं देते तो जेल दो । वे शांतिपूर्ण तरीके से सत्याग्रह कर रहे हैं बेकारी के खिलाफ काम देने के लिए या बेकारी भत्ता देने के लिए । वह तो खुद जेल जाने को तैयार हैं लेकिन आज उन पर गृह मंत्री जी की नाक के नीचे बर्बर लाठी-चार्ज किया जा रहा है । उनको पुलिस की लाठी से जख्मी किया जा रहा है । इस तरह से रोज चीजें हो रही हैं ।

श्री उपसभापति : कृपया समाप्त करिए ।

श्री भोला प्रसाद : मैं समाप्त कर रहा हूं – जीवन से निराश हो कर डकैतियां करने के लिए जाते हैं । आज आप उनको रोक नहीं पाते । खेत मजदूर और हरिजनों पर हमला हो रहा है । उनकी इज्जत लूटी जा रही है । उनकी हिफाजत पुलिस और उनके अफसर नहीं कर सकते हैं उल्टे उन पर जुल्म करते हैं । यह नीति है सरकार की । अगर यह नीति बरकरार रहेगी तो देश में शांति व्यवस्था कायम नहीं रह सकती । मैंने अभी छोटा नागपुर और संथाल परगना की बात कही । अगर सरकार की यही नीति रही और वहां की पुलिस का रवैया बदला नहीं तो असम की तरह वहां भी हालत पैदा हो जाएगी । वहां के आदिवासियों की मांगें हैं कि हमें जमीन का हक मिलना चाहिये । हमें अपनी जमीन जोतने का अधिकार होना चाहिये । उसकी हिफाजत होनी चाहिये । उनकी हिफाजत करने के बजाय पुलिस उन पर जुल्म कर रही है जिसका नतीजा यह होगा, जिसकी प्रतिक्रिया यह होगी कि असम की तरह वहां भी यही हालत होगी । इस तरह की सरकार की जन विरोधी नीति के चलते, जनविरोधी कारेवाई के चलते आज देश में स्थिति जो पैदा हो रही है उसी से शांति व्यवस्था बर्बाद हो रही है ।

ज्ञानी जैल सिंह : उपसभापति जी, आनरेबल मेम्बर ने इस बात को कहा है कि बिहार के एक जिले के अन्दर 117 गांवों में पुलिस चौकियां हैं । दूसरी बात उन्होंने कही है कि बटाईदारों की मदद नहीं कर रहे हैं बल्कि जमींदारों की मदद कर रहे हैं और दूसरी बातें कहीं । उन्होंने क्वेश्चन सिर्फ एक ही किया है कि उसको बन्द करेंगे या नहीं । मैं यह कहना चाहता हूं कि हमारी सेन्ट्रल गवर्नमेंट के लेवल तक ऐसी कोई बात नहीं आई है । मैं आनरेबुल मेम्बर का शुक्रगुजार हूंगा कि जो उन्होंने पूछा है उसकी जानकारी या स्पेसिफिक चार्जेज, जहां-जहां ये बातें हुई हैं उनके नाम, बटाईदारों के नाम, जमींदारों के नाम हमें दे दें । हम इसकी जानकारी कर लेंगे और इस पर मुनासिब ऐक्शन लेंगे ।

SHRI G. C. BHATTACHARYA (Uttar Pradesh): Sir, the first statement of the Minister of State for Home Affairs is that the situation has improved. May I know whether this country was more unstable at any time since Independence, than it is now? May I know whether there was any such carnage before as happened in Tripura? We are forgetting what is happening in Assam or other North-Eastern States. Do you find any other such example, before this Government came into power? What is happening in Kashmir? What is happening in the other parts of the country, namely, Maharashtra, Tamil Nadu, Karnataka, Andhra Pradesh and Punjab.

AN HON. MEMBER: What about Uttar Pradesh?

SHRI G. C. BHATTACHARYA: I will come to Uttar Pradesh separately because it is going to burst and it is only preparing now. In

other places the developments have already taken place. Even after all these development if the Government is complacent enough, then what inference one can draw but to say that this Government is also a party to destabilisation. Sir, they are saying that they have stopped atrocities on the Harijans and are taking credit for that. May I know whether there have been any more serious incidents than what happened at Kafalta? May I know whether the atrocities that were let loose by the Government could be even thought of before this Government came into power? What about the atrocities on the Kisan movements and the peaceful peasants? Were there any such incidents before this Government came into power? Even before 1977 such developments did not take place. There is so much of oppression on almost all sections of the society.

Then I give you the example of students. He has also referred to students and the youth and journalists. I want to know which part, which section of the people, is today feeling safe and on whom atrocities have not been committed. You are talking of minorities. I ask, what has happened in Moradabad, in Aligarh and in Allahabad. What has happened is unprecedented. We are forgetting facts and the Home Minister is taking this House for a ride giving some statistics. We have forgotten what has happened in Moradabad and Aligarh and what deep injury it has caused to the body politic of this country. We are talking as if we are not at all aware of all these things and we are projecting a picture as if everything is all right and we are better and we are still trying to improve the position, and give a better performance. Sir, why are all these things happening? The custodians of law and order are involved in cases like Moradabad and rape and other things. They become a party to these things. Nobody can say, and not even the Home Minister can say, that these were communal riots. It was the State Government police machinery which came into conflict.

Then, Sir, without quoting anybody, I want to know what was happening yesterday when in a meeting of the UP Congress(I) M.Ps. they said that the law and order situation in U. P. itself has gone down under the present Chief Minister. Do I need to quote anybody else? It is the Congress(I) M. Ps. who are saying these things. Sir, if the police is out of their control, if the custodians of law and order are out of their control, how are they supposed to bring down the crime rate or improve the law and order situation. Now the only alternative left to them is to employ military. Wherever the law and order situation is there, they are employing military, Armed Forces, indiscriminately. What is the lesson of history? The lesson of history is that these Armed Forces and the report which the Australian High Commissioner has sent, are not to be taken lightly.... because of their action; exactly the same situation prevails here as was in Bangladesh before the murder of Mujibur Rahman when even the ration used to be distributed through armed forces and when all the functions of the Government were entrustd to armed forces. It seems you are also going the same way. If that is so, then people are not going to tolerate you; they are not going to take you on their shoulders. They will certainly rise because of your actions of omission and commission. You say law and order situation has improved. What about Mr. N. K. Singh's arrest? This was one single incident which demoralised the law and order machinery of the Central Government. And now the Home Minister wants us to believe that there is improvement in the law and order situation. I say the law and order situation has gone down and is going down beyond repairs in every part of the country. Because of your failures, it will have a very very bad repercussion and my apprehension is that the way they are dealing with

[Shri G. C. Bhattacharya]

law and order, soon a stage will come when this Government, this democratic system will be over and armed forces will take over. I would request the Home Minister to make an enquiry from any woman in any part of the country whether the ladies can go out with any silver or gold ornaments. Sir, as you know, Hindu ladies do put on some ornaments. But now even. *Mangal Sutra* they cannot wear and they have to put on artificial things. This is the state of affairs. They cannot go out with any ornaments or money with them. And the Home Minister's statement is that there is improvement.

ज्ञानी जैल सिंह : उपसभापति जी, आनरेबुल मेम्बर ने कहा कुछ हवाला देकर आसाम, काश्मीर, तमिलनाडु, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश और किसान आन्दोलन तथा दूसरे कुछ वर्गों का नाम लेकर कि इनमें जो बैचेनी पैदा हुई है, एजीटेशन हो रहा है, इस अवस्था को देखते हुए गृह मंत्री कैसे कर रहे हैं और क्यों नही कर रहे हैं ।

श्री जी० सी० भट्टाचार्य : मैं इसके लिये नहीं कह रहा हूं। मूवमेंट है आप उसको दबा रहे हैं ।

ज्ञानी जैल सिंह : मूवमेंट जो है हम उसको क्यों दबा रहे हैं इसके लिये कह रहे ?

श्री जी० सी० भट्टाचार्य : जिस तरह से आप मूवमेंट को दबा रहे हैं, उसके लिये कह रहा हूं।

ज्ञानी जैल सिंह : मैंने आनरेबुल मेम्बर की बात पर पूरा गौर किया है । हम इस मूवमेंट को नाजायज ढंग से नहीं दबा रहे है। हम कोशिश करते हैं कि बात को सुलझाया जाय और जो जेनुअन ग्रीवासेंज किसी भी तबके के है उनको निवृत्त करके, उनका समाधान करके उस मूवमेंट को दबाया जाय । लेकिन जो महत्वपूर्ण सवाल उन्होंने किया कि यह स्थिति क्यों बिगड़ी । मैं एक बात कहना चाहता हूं कि स्थिति बहुत ही बिगड़ सकती थी, जैसे हालात थे, जैसी मशीनरी हमारे हाथ में आई और वह बिगड़ी हुई मशीनरी जो थी उसमें डिसिप्लिन टूटा हुआ था, कास्टिज्म का जोर बढ़ा हुआ था, कम्युनजिस्म का जोर था, रीजनलिज्म का जोर था और इससे वह बहुत काफी बिगड़ गई थी । वह मशीनरी हमारे हाथ में आई। हमने उसको सुधारने की कोशिश की और लोगों को समझाने की कोशिश की बहुत सब्र से, शांति से और बहुत नरमी से और जहां जरुरत पड़ी तो सख्ती भी करनी पड़ी। अब वे कहते है कि क्यों हो रहा है ? एक सब से बड़ा कारण मैंने पहले भी बता दिया है और दूसरा बड़ा कारण यह है कि किसी मुल्क को डेमोक्रेसी में अपोजीशन पार्टियों को जब निराशा पैदा हो जाए तो वह बहुत खतरनाक होता है । लेकिन पहली सरकार के वक्त अपोजीशन पार्टी के 152 के करीब मैम्बर थे और अपोजीशन के लीडर की उस वक्त तस्सुवर किया गया था । अब कांग्रेस की मेजोरिटी इतनी हो गई और बदकिस्मती से जितनी दूसरी पार्टियां है उनके टुकड़े हो गए । कोई अपोजीशन ही नहीं रही । अपोजीशन पार्टी अगर काफी तादाद में हो तो वह जिम्मेवारी महसूस करती है कि मैं ऐसी बात न करु जिससे जब मैंने राज करना हो तो उसे कुछ करना पड़े । जब यह हालत हो जाए किसी का बैंक बैलेंस न रहे उससे पूछो कि तुम कितना चन्दा दोगे तो वह अपनी बैंक की बुक सामने रख देता है जितना चाही भर लो । इसमें जिम्मेवारी कम है । इसलिये जब उन्होंने बार-बार पूछा तो कहना पड़ता है कि हमारे विरोधी जिनका में बहुत अदब करता हूं वे जिम्मेवारी से काम नहीं लेते हैं और हर चीज को एजीटेशन करके सुलझाना चाहते हैं । जहां एजीटेशन के साथ उनके इत्तेफाक नही या वे ठीक नहीं समझते तो उसको दबाने के लिए सरकार की सहायता नहीं करते । बल्कि इस बात

से खुश होते हैं। कि एजीटेशन किया जाए । अब किसानों के एजीटेशन को एक नया रुप दिया गया । कोशिश यह की जा रही है । एक माननीय सदस्य के मुंह से निकला कि यहां तो हो रहा है लेकिन उत्तर प्रदेश में तैयारी हो रही है । यह उनको ही मालूम है ।

श्री जी० सी० भट्टाचार्य : हम को नहीं मालूम है कि कौन तैयारी कर रहे हैं ।

ज्ञानी जैल सिंह : इसका कारण मैं बताऊं, आप जानते ही हैं ।

श्री जी० सी० भट्टाचार्य : कांग्रेस (आई) के एक एम० पी० ने कल यह कहा । हम को मालूम नहीं है कि कौन कर रहे हैं ।

ज्ञानी जैल सिंह : माननीय सदस्य की इस बात से मुझे खुशी है । बहुत हकीकी बाते उन्होंने हमको समझायी । मैं तो इस बात पर विश्वास रखता कि यहां डेमोक्रेसी में कोई गलती करने नही देता । अगर कोई गलती करे तो पकड़ा जा सकता है । इससे हम अपनी गलतियों का सुधार करेंगे लेकिन मैंने जो उन के सवाल है उनका जवाब दे दिया है । आप मानेगे जिस ढंग से, जिस तरीके से, जिस साजिश से यह हिन्दुस्तान में बदअमनी पैदा करने की कोशिश की गई और जैसे विदेशी यहां रहने वाले एक एम्बेजडर की रिपोर्ट को आधार बना कर और फिर उस रिपोर्ट का प्रोपेगण्डा किया जा रहा है इससे साबित होता है कि देश की हालत को बात खतरनाक बनाना चाहते थे । लेकिन मैं अब भी कहता हूं कि हम ने इन खतरनाक हालातों का मुकाबला किया है, एफिशियेंटली किया है, आनेस्टली किया है और अभी भी करेंगे तथा हिन्दुस्तान में बदअमनी पैदा नहीं होने देंगे ।

SHRI G. C. BHATTACHARYA: You are responsible for it. Nobody else is responsible.

SHRI B. D. KHOBRAGADE (Maharashtra): Sir, the hon. Minister of State of Home Affairs, Shri Makwana, has quoted some figures and claimed that there has been improvement in the law and order situation. Mr. Ramamurti, another hon. Member, also quoted some figures and he has pointed out that there has been an increase in the cases of atrocities, in the case of violence and so on and, hence he has said that the law and order situation in the country is deteriorating. There is no doubt that the law and order situation in this country has deteriorated extremely. Sir, there are many factors which are responsible for it. But it seems that the Congress(I) itself wants that the law and order situation should further deteriorate. During the byelection in the Indore Constituency, one advertisement was published by the Congress(I) workers and this was published in a responsible newspaper, Hindi newspaper, 'Nayi Duniya'. What is the appeal to the voters? They have appealed to the voters to elect Congress(I) candidate for establishing anarchy and indiscipline in the country. This is what has been said in Hindi. अराजकता, अनुशासनहीनता स्थापित करने के लिए इंका उम्मीदवार को आप विजयी कीजिए । इससे यह साबित होता है कि इंका के लोग इस मुद्दे से लोगों के सामने जाते है *(Interruptions)*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: There must be some printing mistake, I think.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: This was not a mistake. On the next day, some objection was raised by the Congress(I) workers and a photostat copy of the advertisement written in hand of the Congress workers was published in the paper to show that these words 'anarchy' and 'indiscipline' were used. So, there cannot be any mistake. Sir, I would not dilate on this point any further. I would like to ask, what are the reasons for deterioration in the law and order

[Shri B. D. Khobragade]

situation? The first thing is, there are a large number of unauthorised and unlicensed arms. They are multiplying every day. A large quantity of unauthorised and unlicensed arms and ammunition has been seized recently by the Government. The Government should have known that these unlicensed arms are increasing every day. They are creating further problems. I would like to know what steps he is going to take to curb the multiplication of these unauthorised and unlicensed arms.

Secondly, Sir, the Government should always take precautionary measures. We have noticed the incidents in Moradabad, Aligarh, Allahabad and other places. In Karlta 14 persons were murdered and butchered. Preparations for such incidents were going on for days together. What were the intelligence officers of the Government doing? Is the Government not responsible for not taking precautionary measures before the situation exploded? They did nothing. Therefore, my second question is, what precautionary measures are they going to take in future so that such incidents did not take place, did not recur?

Thirdly, I would like to know from the hon. Minister whether the Government is going to think in terms of finding a permanent solution to the problem. Other hon. Members have raised the points that the law and order situation involves the social and economic problems also. Social and economic conditions are also involved, particularly when we consider the question of minorities and the Scheduled Caste and Scheduled Tribe persons. I would like to know what is he going to do to improve the social and economic conditions of the weaker sections? Of course, the Government is paying lip sympathy to the weaker sections and the minorities, but unfortunately it has not done anything to improve their economic conditions. Sir, the Sixth Plan is on the anvil. During the previous Five Year Plans nothing has been done to improve the economic conditions of the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes. Therefore, I would appeal to the Government that whatever allocations are made in the Sixth Plan, sufficient amount in proportion to the percentage of the Scheduled Caste and Scheduled Tribes populatidon should be earmarked for their economic development. I would like to know from the hon. Minister whether he is going to take this step and allocate sufficient funds in proportion to the percentage of the population of the Scheduled Castes and Scheduled Tribes in the Sixth Plan.

Lastly, I would like to ask the hon. Minister whether they are going to take any action against the police officers who are responsible for such heinous offences, and who are protecting the culprits and offenders? For example, we know about Baghpat. The Government tried to protect till the last moment the police officers who committed rape and atrocities. There was a demand by the people that they should be immediately suspended or at least transferred, but nothing was heard for a long time. Ultimately, because of the pressure of the people they had to transfer the officers. Now in Orissa when the wife of a journalist was raped and murdered, what was the action taken by the Government? Instead of taking action, they have tried to protect the offenders. (*Interruptions*)...The case of Nirankaris is also mentioned just now. If the things go on like that, the real culprits will have no fair. The goondas and offenders will think that nobody can do any harm to them, might commit. And, therefore, there will be further deterioration in the law and order situation. I would, therefore, like to know from the Home Minister whether any action has been taken in such cases, in the past and whether steps will be taken in future against officers who have been responsible for not giving protection to honest citizens and who are trying to give protection to the goonda elements in this country?

ज्ञानी जैल सिंह : उपसभापति जी, आनरेबल मेम्बर ने पहली बात जो कही कि कांग्रेस चाहती है कि ला एंड आर्डर की पोजिशन डिटीरियोरेट हो जाये . .

श्री भा० दे० खाबरागड़े : यह पेपर में पढ कर कहा है ।

ज्ञानी जैल सिंह : यह मैं नहीं कह सकता कि कांग्रेस (आई) को कहा है या दूसरी कांग्रेस को कहा है । कांग्रेस (आई) की सरकार तो इसे बिलकुल नही चाहती, और दूसरी कांग्रेस को कहा हो, तो ..... (*Interruptions*)

श्री भा० दे० खोबरागड़े : नहीं, नहीं, कांग्रेस (आई) को ही कहा है । कांग्रेस (आई) के लोगों ने ही यह एडवर्टेईजमैंट छपबाया है ।

ज्ञानी जैल सिंह : यह बात गलत है । अखबार में गलत बात छपी है। कांग्रेस (आई) चाहती है कि अमन शांति रहे और उसमें वह मददगार साबित हो । दूसरी बात जो उन्होंने कही कि नाजायज असला लोगों के पास है, उसको निकालना चाहिये । भारत सरकार ने प्रांतीय सरकारों को यह भी राय मश्विरा दिया है कि आप एक तारीख मुकरर कर दें जो एक महीने के अन्दर अगर नाजायज असला दाखिल करवा देंगे उन पर कोई हम एक्शन नहीं लेंगे, ताकि नाजायज़ असला जहां भी जमा होगा, वह किसी डर के बगैर, खौफ के बगैर दें दें, तो फिर उसके बाद और भी जानकारी की जायेगी और इसमें तमाम भारत के अंदर पुलिस को एलर्ट किया है कि नाजायज असला जहां जहां भी हो, उसे निकाला जाये और उपसभापति जी, आपको मालूम ही है कि एक जमाना आया उस वक्त एस पी०, डी० एस० पी० एस० एच० ओ०, सब-इंसपैक्टर और हैड कांस्टेबल, यहां से लेकर एक ही कास्ट के आदमियों को रखा गया था और वहां के एस० डी० एम० भी उसी कास्ट के थे और उन्होंने इस तरह से असला दिया कि एक-एक परिवार के पास अगर उसके दस मेम्बर है तो आठ लाइसेंस दे दिये। इस तरह से असले के जो नाजायज तौर पर लाइसेंस दिये गये थे, भारत सरकार ने यह भी कहा है कि इसकी जानकारी की जाये । यह लाइसेंस भी जोरावर लोगों को दिये गये, कमजोर लोगो को नहीं दिये गये, हरिजनों को नहीं दिये गये । यही वजह थी कि जब हरिजनों ने इस जरनल इलैक्शन में उन लोगों का कहां नहीं माना, तो उन लोगों ने बदला लेने के लिये नई सरकार के बनते ही इस बात का यत्न किया कि हम इसको बता दें और यही पिपरा में हुआ, यही उत्तर प्रदेश में हुआ । यह दो तीन जगह के वाक्यात जिनका जिन्होंने जिक्र किया, उनका कारण यह था। लेकिन गवर्नमेंट ने इस मामले पर कोई ढील नही दिखाई । यह और भी बढ सकते थे, लेकिन हमने उनको और नही बढने दिया। मुझे खुशी है कि आनरेबल मेम्बर ने इस बात को माना कि यह साजिश थी, तैयारी थी ।

श्री भा० दे० खोबरागड़े : हमने साजिश के बारे में नहीं कहा, हमने सिर्फ ..... (*Interruptions*)

ज्ञानी जैल सिंह : आपने यह कहा कि यह तैयारी थी ।

SHRI B. D. KHOBRAGADE: He is referring to a statement which I did not make at all.

मैंने साजिश के लिये नही बोला, मैंने बोला (*Interruptions*)

ज्ञानी जैल सिंह : आपने शब्दों में बोला कि यह तैयारी थी और इस तैयारी की पहले जानकारी क्यों नहीं दी । आपने यह कहा हैं, इसे रिकार्ड में देख लीजिये ।

श्री भा० दे० खोबरागड़े : मैंने साजिश की बात नहीं कही ।

ज्ञानी जैल सिंह : आपने कंस्पीरेसी नहीं कहा, प्रिपेयरेशन कहा आपने । तैयारी हो रही थी, प्रिपेयरेशन की हिंदी तैयारी है ना और क्या है ?

श्री उपसभापति : आप शब्दों पर मत जाइये । आप अपनी बात कहिये । वे शब्दों में जाते हैं, तो उसको छोड़ दीजिये ।

श्री भा० दे० खोबरागडे : नहीं, साजिश का मतलब निराला हो जाता है ।

श्री रामेश्वर सिंह : कास्ट पर भी आपने (*Interruptions*)

ज्ञानी जैल सिंह : मैं वह ट्रांसलेट नहीं करूंगा जो उनको मंजूर न हो । इसलिये उपसभापति जी यह उन्होंने कहा है । मैं मानता हूं कि बागपत में भी तैयारी थी और उस तैयारी की पहले जानकारी नही थी । यह सी० आई० डी० ने गलत बात की है । इसीलिये हमने दोबारा सी० बी० आई० को रिआर्गेनाइज करने का और उनको नये ढंग से स्पेशल कोर्स में लाकर तैयार करने के लिये भारत में सारे प्रांतों में यह यत्न किया है कि इन बातों को पहले देखा जाये ताकि प्रिवेंटिव्ह मैजर्स अख्तियार किये जायें, जिससे ऐसे वाकयात न हों, उनको रोका जाये . . .

श्री उपसभापति : जबाब हो गया . . .

ज्ञानी जैल सिंह : उन्होंने यह भी कहा कि यह स्थायी कसे होगा तो उसके लिये . . .

श्री भा० दे० खोबरागडे : प्लांनिग में प्रपोजल के तौर पर वह . . . . .

ज्ञानी जैल सिंह : प्लांनिग का प्रपोजाल, जो छवें प्लान में लाया है, वह इस बात से ताल्लुक रखता नहीं है न मुझे इस वक्त रकम याद है लेकिन मैं यह कह सकता हूं कि छवें प्लान में वीकर सेक्शन्स के लिये, शेड्यूल्ड कास्ट के लिये, शेड्यूल्ड ट्राइब्ज के लिये पहले पांच प्लानों से ज्यादा रकम रखी गई है ।

श्री भा० दे० खोबरागड़े : बड़ी रकम का सवाल नहीं है । उनकी जितनी पापुलेशन है उस परसेंन्टेज से उनके लिये फण्ड एलीकेट करना चाहिये ।

श्री उपसभापति : अब उनके पास फिगर्स नहीं है । प्लांनिग मिनिस्टर दे सकते हैं ।

ज्ञानी जैल सिंह : प्लांनिग मिनिस्टर दे सकते हैं । लेकिन मोटे तौर पर मैंने बता दिया । कोई चेलेन्ज करे तो साबित कर सकता हूं ।

श्री उपसभापति : सदन की कार्यवाही साढे 3 बजे तक के लिये स्थगित की जाती है ।

The House then adjourned for lunch at forty-one minutes past two of the clock.

The House reassembled after lunch at thirty-two minutes past three of the clock, MR. DEPUTY CHAIRMAN in the Chair.

REFERENCE TO REPORTED DISCRIMINATORY POLICY PURSUED BY THE UNITED KINGDOM TOWARDS INDIANS THERE

SHRI ARVIND GANESH KULKARNI (Maharashtra): Sir, I want to draw the attention of the Minister of External Affairs as well as the attention of the Minister of Parliamentary Affairs to convey to what we say the proper quarters... (*Interruptions*). Here. Sir,...

श्री प्रकाश मेहरोत्रा (उत्तर प्रदेश): स्पेशल मेंशन है कि कालिंग अटेंशन है ?

श्री उपसभापति स्पेशन मेंशन है ।

श्री प्रकाश महरोत्रा : ये तो कह रहे हैं कि अटेंशन काल कर रहे हैं ।